
मासिक
रामपुर उ. प्र.
Gaffar

आरम्भ अल्लाह के नाम से

मासिक **कान्ति** रामपुर यू.पी.

सम्पादकः—कौसर यज़दानी

वर्ष ६ } नवम्बर सन् १६६३ ई० तद० जुमादल उख़रा सन् १३८३ हि० { अङ्क २

अपनी बातें

प्रिय पाठको !

इधर कई महीनों से कान्ति की ग्राहक संख्या बढ़ाने और पाठकों के विचार जानने के सिलसिले का एक सुझाव यह सामने आ रहा है कि मैं भारत के प्रमुख स्थानों का दौरा करूँ। सुझाव उचित व लाभवर्द्धक है, पर इसे सफल बनाने में आप के सहयोग की ज़रूरत है। कृपया आप बतायें कि अगर मैं आप के यहाँ आने का प्रोग्राम बनाऊँ तो आप क्या और कितना सहयोग कर सकेंगे और आपके यहाँ आना कब उचित होगा। जवाब जल्द दें ताकि दिसम्बर तक प्रोग्राम बनाया जा सके।

इस के अलावा कुछ और सुझाव भी मिले हैं, पर इन सब पर एक समय ही में तो अमल किया नहीं जा सकता, हाँ, कोशिश की जायेगी कि कम से कम समय में, अपनी सामर्थ्य भर इन में से बहुत से सुझावों को अमली जामा पहनाया जा सके।

आप का सदा हम से सहयोग बना रहेगा, इसकी हमें पूरी आशा है। आपका—

कौसर यज़दानी

क्या ? कहाँ ?

मूल्य ३७ नये पैसे]

[वार्षिक मूल्य ४)

जमाअत इस्लामी हिन्द की ओर से मुहम्मद सिद्दीक़ ने शंकर प्रिंटिंग प्रेस, रामपुर में छपवा कर 'कान्ति' कार्यालय से प्रकाशित किया।

छात्रों में यह बिगाड़ क्यों ?

पिछले दिनों इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के छात्रों को कुछ शिकायतें हुईं। उन्होंने सीधे तरीक़े से अपनी माँगें पूरी कराने के बजाय हड़ताल और हड़बोंग शुरू कर दी। फिर क्या था ऐसा जान पड़ा कि हर जगह के छात्र तय्यार बैठे थे। उनकी हमदर्दी में जगह जगह हड़तालें शुरू हुईं। प्रदर्शन किये गये, पढ़ाई-लिखाई बन्द हुई, तोड़फोड़ और हड़बोंग आरम्भ हो गया। मामूली मामूली बातों पर छात्रों की ओर से ऐसे प्रदर्शनों की ख़बरें आये दिन आती रहती हैं। नई नस्ल का अजीब हाल हो रहा है, न तो इनमें पढ़ने लिखने का शौक रह गया है, न माता-पिता और अध्यापकों का आदर-सम्मान, न दीन-धर्म का पास है न देश जाति का प्रेम, न ऊँचे आदर्शों की चर्चा है न समाज और ईश्वर का भय। कोई बात तबीअत के ज़रा खिलाफ़ हुई कि हड़बोंग और तोड़फोड़ शुरू हो गई।

हमारी नई नस्ल में जिस तेज़ी से बिगाड़ आ रहा है वह देश के हर शुभचिन्तक के लिये अत्यन्त शोचनीय है। हम सब का कर्तव्य है कि बिगाड़ के मूल कारणों का पता लगायें और इन्हें दूर करने की भरसक कोशिश करें।

बिगाड़ के प्रायः निम्न कारण हैं:—

● नवयुवकों को सम्भालने के लिये जिस सूझ-बूझ और पित्तामारी की ज़रूरत है, माँ बाप और अध्यापकों में आमतौर पर उसकी बहुत कमी है इसीलिये वे समस्याओं को सुलझाने के बजाय और बिगाड़ देते हैं।

प्रचलित शिक्षा-व्यवस्था अपने पाठ्यक्रम, पाठान्तर क्रियाओं, पाठ्यपुस्तकों और कल्चरल प्रोग्रामों इत्यादि द्वारा छात्रों को धर्मात्मा, कर्तव्यप्रायण तथा सदाचारी बनाने के बजाय उन्हें कर्त्तव्यविमूढ़ तथा आचारशून्य बनाने में अधिक सहायक बनती जा रही है, क्योंकि वह भौतिक समृद्धि तथा आर्थिक उन्नति को लक्ष्य तो जरूर ही बना देती है परन्तु चरित्र को संवारने की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं देती।

● समाज स्वयं बिगड़ा हुआ है, बड़ों के बुरे आचरण, साथियों की बुरी संगत अच्छे भले घरों के नवयुवकों को भी बिगाड़ कर रख देती है।

● राजनीतिक दलों में बहुत ऐसे हैं जो अपने दल के स्वार्थ के लिये छात्रों को इस्तेमाल करते और उनसे तोड़ फोड़, हंगामे और हड़बोंग कराते रहते हैं।

● औद्योगिक क्रान्ति ने जीवन की आवश्यकताओं को बहुत बढ़ा दिया है, भौतिकवाद ने दुनिया की लज़्ज़तों को बड़ी अहमियत दे दी है, फल यह निकला कि लोग दिन रात कमाने से छुट्टी नहीं पाते, अपने बच्चों की देख भाल कब और कैसे करें।

● नई नस्ल के सामने कोई ऊंचा आदर्श रखने में घर, स्कूल और हुकूमत सब असफल रहे हैं। किसी ऊंचे आदर्श के न होने से नवयुवकों की सारी शक्तियाँ गलत राह पर पड़ रही हैं।

● परिवार-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई है बाप अपने कारोबार के सिलसिले में कहीं दूर रहता है जिससे बच्चों की निगरानी नहीं हो पाती। फिर यह भी कि हर व्यक्ति अपने कुटुम्ब से शीघ्र ही आज़ाद होना चाहता है, धर्म और समाज के

(शेष पृष्ठ ४० पर)

तीन बात

- तीन उपकारों का बदला चुकाना कठिन है :—
  माता पिता का, अभिभावक (*Gaurdian*) का, गुरु का।
- तीन को अपने भीतर से निकाल दो :—
  राग को, द्वेष को, डाह को—
- तीन का साथ छोड़ दो :—
  जुआरी का, शराबी का, व्यभिचारी (जिना करने वाले) का।
- तीन को मत रोको :—
  दान देने वाले को, धर्म-प्रचार करने वाले संत को, सेवा करने वाले सेवक को।
- तीन को सदा अपनाओ :—
  सत्य को, धर्म को, सदाचार को।
- तीन से घृणा मत करो :—
  रोगी से, दुखी से, पिछड़ी जाति वाले से।
- तीन से घृणा करो :—
  पाप से, अभिमान से, मन के मैलेपन से।
- तीन से ज्ञान मिलता है :—
  श्रद्धा से, परिश्रम से, संयम से।
- तीन नर्क के दरवाजे हैं :—
  काम, क्रोध, लोभ।
- तीन बनो :—
  नम्र, सरल, सुशील।
- तीन चीज मत देखो :—
  अपने गुण, दूसरों के दोष, दुर्जनो का महत्व।
- तीन महान होते हैं :—
  जो धन पाकर गर्व न करें, जो धन के नष्ट होने पर शोक न करें, जो पराये धन को देखकर डाह न करें।
- तीन बातें न भूलिये :—
  प्रतिज्ञा करके पूरा करना, कर्ज लेकर वापस करना, भरोसा देकर काम करना।
- तीन अन्धे हैं :—
  कामी, क्रोधी, लोभी।

—मशकूर आलम

—मौलाना हामिद अली

क्या ईश्वर की आवश्यकता नहीं ?

ईश्वर के बिना सृष्टि के बारे में कुछ कहा जा सकता है या नहीं ? इस सवाल का जवाब हम पा चुके हैं । दलीलों और प्रमाणों से हम इस नतीजे पर पहुँच चुके हैं कि ईश्वर के बिना सृष्टि का वजूद सम्भव ही नहीं हो सकता । अब हमें इस सवाल पर विचार करना है कि ईश्वर से उदासीन होकर मानव-समस्यायें हल की जा सकती हैं या नहीं ?

मानव-समस्यायें क्या हैं ? अगर हम मनुष्य की तमाम ही समस्याओं को समझने बैठें तो एक बड़ा दफ्तर तैयार हो जायेगा और वार्ता फिर भी पूरी न होगी, इसलिये हम यहाँ उन्हीं समस्याओं को लेंगे जो बुनियादी हैं और यह देखेंगे कि ईश्वर से उदासीन होकर ये समस्यायें हल हो जाती है या नहीं । इस समय सबसे पहले हम नैतिक समस्या को ले रहे हैं ।

नैतिक समस्या

मनुष्य की सबसे बुनियादी समस्या उसकी नैतिक समस्या है । सबसे अहम बात यह है कि मनुष्य मनुष्य बने, अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझे और जिम्मेदारी के अहसास के साथ जीवन के सारे काम करे, हर हाल में न्याय और सत्य पर जमा रहे और हर हाल में सत्य और न्याय का साथ दे, सिर्फ जायज और सही उद्देश्यों को अपनी दृष्टि में रखे और उनको प्राप्त करने के लिये केवल शुद्ध साधन ही अपनायें, भ्रष्टाचार अन्याय और शोषण की गन्दगियों से अपने आपको बचाये रखे, झूठ, छल, और धोखाधड़ी से ऐसे बचे, जैसे कोई शेर के मुंह में जाने से बचता हो, पक्षपात, गलत तरफदारी, और भाई-भतीजावाद से बचा रहे, दूसरों का अधिकार हड़पने, दुख पहुँचाने और अत्याचार करने सरीखे कामों के निकट न जाये, घृणा, वैमनस्य, द्वेष और डाह की निन्दित भावनाओं से अपने मन को स्वच्छ रखे, मनुष्यों से प्रेम करे और दुख दर्द में उनके काम आये, मानव-मात्र के जन-धन और मान की प्रतिष्ठा करे, प्रतिज्ञा, वचन और वरदान को हर क़ीमत पर पूरा करे, सच्चाई पर डटा रहे और हर हाल में प्रण पूरा करे, सत्यनिष्ठा, अमानतदारी आदि को अपनी आदत बनाये और असत्यप्रियता, बेईमानी आदि से अपने जीवन को पाक रखे, दो शब्दों में यह कि आचार-विचार और मानवता की प्रतिमूर्ति बने—साधारण सोच विचार से यह बात समझ में आ सकती है कि इन्हीं नैतिक गुणों पर व्यक्ति-जाति और समस्त मानव मात्र की उन्नति और प्रगति का आधार है । भौतिक और वैज्ञानिक प्रगति मनुष्य के लिये उसी समय लाभप्रद और निर्माणात्मक बन सकेगी जब मानव-जाति इन विशेषताओं से सुसज्जित हो वरन् यही भौतिक और वैज्ञानिक प्रगति सर्वव्यापी विनाश का कारण बनेगी जैसा कि इस समय बन रही है ।

आज का सबसे अहम सवाल यह है कि मनुष्य में नैतिक गुण——जिन पर उसकी उन्नति और प्रगति निर्भर है——क्यों पाये जायें ? इस प्रश्न का विश्लेषण कीजिये तो दो मुख्य प्रश्न सामने आयेंगे। पहला प्रश्न यह कि नैतिक मापदण्डों (Moral Values) को क्यों माना जाये ? इन नैतिक

मापदण्डों के पीछे वह कौन सी पुष्टि और कौन सा प्रचालन (Sanction) है जिससे मनुष्य उन मापदण्डों को माने और उन्हें अपने जीवन का आधार बनाये। यह बात कि मनुष्य नैतिक मापदण्डों को सदा ही मानता आया है, आज के मनुष्य के लिये कैसे भी मान्य नहीं। वह पूर्व युग को अज्ञानता का युग समझता है, उसने सभी सांचों और नक्शों को तोड़ फोड़ कर रख दिया है। वह किसी चीज को भी मानने से पहले यह मालूम करना चाहता है कि उसे अपनाने का कारण क्या है? आप कुछ गुणों को अच्छा और कुछ को बुरा कहते हैं, आज का मनुष्य पलट कर आपसे सवाल करता है कि उसके अच्छे और उसके बुरे होने का प्रमाण क्या है? बुराई और भलाई के यह पैमाने आपको कहाँ से मिले? उनका यह पूछना उचित और स्वाभाविक है। वर्तमान युग के नैतिकता के शिक्षकों ने इस बुनियादी सवाल का जवाब देने की अपने जैसी कोशिश की है पर ईश्वर से उदासीन होकर वह कोई ऐसा उद्गम न पा सका जो नैतिक मापदण्डों के लिये असल सनद बन सकता। ज्ञान, बुद्धि अन्तः प्रेरण और अनुभव इनमें से जिसे भी उद्गम और प्रमाण का स्थान दिया जायेगा, वह सिर्फ उसी के लिये प्रमाण बनेगा जिसका ज्ञान, जिसकी बुद्धि जिसका अनुभव या जिसकी अन्तःप्रेरणा इन नैतिक मापदण्डों के पक्ष में गवाही दे, दूसरों के लिये यह गवाही बेकार है, और उससे सम्बन्धित व्यक्ति के लिये भी यह गवाही उसी समय तक उपयोगी है जब तक उसकी राय या उसका अनुभव बदल न जाये। फिर यह सवाल अपनी जगह पर रहा कि आखिर इन चीजों का फैसला मनुष्य के लिए "आज्ञा" कैसे बन सकता है कि मनुष्य उसे बिना कुछ कहे-सुने मान ले। भिन्न-भिन्न चीजों को नैतिक मापदण्डों का उद्गम मानने का नतीजा यह निकला कि ये निश्चित न रहे, जिसने जिस नैतिक मापदण्ड को चाहा, मान लिया और उसके लिये जो कार्य-क्षेत्र चाहा अपना लिया और जिस नैतिक मापदण्ड को चाहा, मानने से इन्कार कर दिया, और नौबत यहाँ तक पहुँची की बहुतों ने इन मापदण्डों का ही इन्कार कर दिया। उन्होंने इस बात के साबित करने में पूरा ज़ोर लगा दिया कि नैतिक मापदण्ड कोई हकीकत और कोई अहमियत नहीं रखते। कुछ दूसरे लोगों ने—जिनका प्रभाव वर्तमान युग के सामाजिक मानचित्र में बहुत उभरा हुआ है—यहाँ तक कह दिया कि ये मापदण्ड सुन्दर और सुनहरे जाल हैं, शोषण करने वाले वर्गों—जागीरदारों और पूंजीपतियों—के बने हुये जाल, जो गरीब और सीधी जनता को फाँसने के लिए तैयार किये गये हैं। इस बुनियादी बात पर तो यह पूरा समूह सहमत था कि नैतिक मापदण्ड मनुष्य के पैर की बेड़ियाँ हैं जिसे काट फेंका न गया तो मनुष्य का कारवां ठिठुर कर रह जायेगा और प्रगति तथा सफलता उसके पैरों को कभी न छू सकेगी।

मनुष्य चला कहाँ से था और पहुँच कहाँ गया। नैतिक मापदण्ड मानव-जाति की उन्नति व प्रगति के लिये अनिवार्य हैं, मनुष्य ने यहाँ से यात्रा आरम्भ की थी और पहुँच यहाँ गया कि नैतिक मापदण्ड मानवता की प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट हैं, इसलिये जितनी जल्द उन्हें रास्ते से हटा दिया जाये, अच्छा है। ऐसा क्यों हुआ? मनुष्य उस अथार्टी की खोज में निकला था जिसके बल पर इन मापदण्डों को माना और मनाया जा सके। ईश्वर से उदासीन होकर उसने समस्या हल करनी चाही पर न समस्या हल होनी थी, न हल हुई। नैतिक मापदण्डों के लिए कोई ऐसी अथार्टी न मिल सकी जो इस पद के योग्य होती और जिसके सामने मनुष्य घुटने टेक देता। नतीजा यह हुआ कि नैतिक मापदण्ड बेवज़न और बेसहारा होकर रह गये। सोच-विचार करने वाले मस्तिष्कों ने महसूस किया कि बिना

किसी प्रमाण के, कुछ वस्तुओं को अच्छा और कुछ को बुरा कहा जा रहा है और बिना किसी उचित कारण के कुछ कामों से रुकने और कुछ कामों के करने का हुक्म दिया जा रहा है। इसलिए इनमें से जो लोग अधिक वीर थे उन्होंने खुल्लम-खुल्ला उन मापदण्डों का इन्कार कर दिया, जो लोग साहस की कमी के कारण इन्कार न कर सके वे भी दुविधा में पड़ गये और नैतिक मापदण्डों पर उन्हें भी विश्वास न रहा। जो नैतिक नियम प्राचीन युग से उन मापदण्डों में गिने जाते थे वे इस तरह तोड़ मरोड़ कर रख दिये गये मानों वे अज्ञानता और मूर्खता का सब से बड़ा प्रतीक हो। इस स्थिति के भयंकर परिणाम मुंह बाये सामने खड़े हैं। नैतिक मापदण्डों के अन्त का अर्थ है मानवता का अन्त और मानव-जाति की पूर्ण तबाही और बरबादी। जिन लोगों को इस संकटकालीन स्थिति का अनुभव है, वे चाहते हैं कि नैतिक मापदण्डों को उनका खोया हुआ स्थान वापस मिल जाये, पर यह स्थान कैसे मिले? इस बात के सोचते समय उनका दिमाग काम नहीं करता।

यही वह पेचदार स्थिति है जिसका चित्रण हमारे देश के मस्तिष्क पं० जवाहर लाल नेहरू ने एक अमेरिकन संवाददाता को एक इन्टरविव देते हुये कुछ समय पहले किया था—यह बात याद रहे कि पंडित जी ईश्वर और धर्म को नहीं मानते हैं—इन्टरविव का सार यह था कि जातियों की उन्नति और सफलता के लिये नैतिक प्रगति आवश्यक है पर नैतिक प्रगति क्यों हो यह एक पेचीदा सवाल है, पहले इस प्रगति का साधन धर्म था, पर अब जब कि धर्म की गुञ्जाइश नहीं है, यह बात समझ में नहीं आती कि नैतिक मापदण्डों को लोगों से कैसे मनवाया जाये।

पं० जी ने जो बात कही है वह वर्तमान वस्तु-स्थिति और वर्तमान दशा का बहुत बड़ी हद तक सही चित्रण है। नैतिक मापदण्ड मानवता के लिये आवश्यक हैं परन्तु वे इस आधार पर मानी जाते रहे हैं कि ईश्वर और धर्म ने उन्हें बुनियादी अहमियत दी है। ईश्वर और धर्म के इन्कार के बाद नैतिक मापदण्डों के लिये कोई अथार्टी बाकी नहीं बचती और इसके बाद ऐसी उम्मीद बेकार है कि मनुष्य अपनी उमड़ती हुई भावनाओं और सुन्दर और हाथ लग रहे फायदों के खिलाफ इन निराधार और निःशक्ति मापदण्डों के आगे घुटने टेक देगा—सैद्धान्तिक रूप से ईश्वर के इन्कार का यही नतीजा निकलना चाहिये और मानवता का अमली तजुर्बा भी इसी की पुष्टि करता है—और नैतिक मापदण्डों की दुर्गति के बाद किसी को यह आशा न करनी चाहिये कि मानव-जाति नष्ट-भ्रष्ट होने से बची रह सकेगी।

लेकिन जैसे ही आप ईश्वर के वजूद को मान लेते हैं, नैतिक मापदण्डों को उनका खोया हुआ स्थान फिर से मिल जाता है। ईश्वर की सत्ता सैद्धान्तिक रूप से भी इन मापदण्डों का उद्गम और सनद बनने की योग्यता रखती है और मानव-जाति का अमली तजुर्बा भी इसके पक्ष में है, क्योंकि मानव इतिहास में सदा ही इसी आधार पर नैतिक मापदण्डों को माना जाता रहा है।

ईश्वर को मान लेते ही आप उसे अथार्टी मान लेते हैं, ईश्वर विश्व का रचयिता और शासक है इसलिये वह इस विश्व की आखिरी और असली अथार्टी है, उसकी हर बात सनद और "आज्ञा" की हैसियत रखती है। इस सैंकशन के बाद किसी दूसरे सैंकशन की जरूरत नहीं। जब उसने नैतिक सिद्धान्तों को स्थाई मापदण्ड का स्थान दे दिया और उन्हें जीवन-व्यवस्था का आधार बना दिया तो कोई नहीं जो उसके फैसले को चुनौती दे सके। मनुष्य उसका दास है और दास की हैसियत इसके सिवा कुछ नहीं कि वह स्वामी को आखिरी अथार्टी माने और उसके फैसले और हुक्म के आगे बिना किसी संकोच के सिर झुका दे। यही नहीं, विश्व के रचयिता का

ज्ञान और विश्व के विधाता की नीति सन्देह और सुविधा से परे है, जब उसके ज्ञान और नीति की दृष्टि से नैतिक मापदण्ड मनुष्य की उन्नति और सफलता के साधन हैं तो मनुष्य का अपूर्ण ज्ञान और बुद्धि इसे माने या न माने, बात सदा के लिये तय हो जाती है और विवाद और बहस के लिये कोई जगह बचती नहीं।

ईश्वर और उसकी शिक्षाओं को मानने से सिर्फ यही सवाल हल नहीं होता बल्कि इस सिलसिले की कई उलझी हुई गुत्थियाँ भी सुलझ जाती हैं। ईश्वर का धर्म नैतिक मापदण्डों की पुष्टि ही नहीं करता, उन मापदण्डों का स्पष्ट रूप से और खुलकर बयान भी करता है, फिर उन्हीं के आधार पर पूर्ण मानव जीवन के लिये पूरे विस्तार के साथ नियम भी देता है, इस तरह कि जीवन का कोई वैयक्तिक या सामाजिक पक्ष नैतिक सिद्धान्तों से वंचित नहीं रहता, इसका नतीजा यह निकलता है कि पूर्ण मानव-जीवन नैतिकता के सुन्दर साँचे में ढल जाता है——ईश्वर का इन्कार करते ही यह सारी व्यवस्था धराशायी हो जाती है—ईश्वर के इन्कार के साथ ही ईश्वरीय शिक्षाओं का इन्कार खुद ही हो जाता है, और ईश्वरीय शिक्षाओं के बीच से हटते ही नैतिक मापदण्ड स्पष्ट और निश्चित नहीं रहते, न वे विस्तृत सिद्धान्त शेष रह जाते हैं जिनके द्वारा नैतिक सिद्धान्त जीवन पर लागू होते, इस हालत में अगर नैतिक मापदण्डों को मारे बाँधे किसी तरह मान भी लिया जाये तो जीवन की समस्याओं में उनकी कोई व्यावहारिक उपयोगिता नहीं रह जाती, और नैतिक समस्या ज्यों की त्यों बिना हल हुये पड़ी रहती है।

दूसरा अहम सवाल जिसने आज के नीति शास्त्रियों को बहुत ही परीशान कर रखा है, नैतिक मापदण्डों पर चलने की प्रेरणाओं का सवाल है, जहाँ तक नैतिकता का खण्डन करने वाली विरोधी शक्तियों का सम्बन्ध है, वे हर तरफ मौजूद हैं और बहुत ज्यादा हैं, मनुष्य के मन में इच्छाओं और भावनाओं का तूफान उमड़ता रहता है जो नैतिक सिद्धान्तों को बहा ले जाने के लिये काफी हैं!

फिर भौतिक लाभ और मान-मर्यादा के उच्च-पद हैं जो रह रह कर मनुष्य को अपनी ओर खींचते और उससे नैतिकता का बन्धन तोड़वा देते हैं, बल्कि उसे इन चीजों में ऐसा फंसा देते हैं कि वह अपने आपको भी भूल जाता है।

इन रूपहली और सुनहरी बुराइयों के अलावा कदम-कदम पर उन्हें शैतान मिलते हैं जो इस बात का प्रयत्न करते रहते हैं कि बुराई से दूर भागने वाले व्यक्ति को कैसे भी बुराई का मजा चखाये फिर तो वह मर जायेगा पर बुराई छोड़ने का नाम न लेगा।

गो हाथ को जुम्बिश[१] नहीं आँखों में तो दम है।
रहने दो अभी सागरो[२] मीना[३] मेरे आगे॥

कुछ काल्पनिक दार्शनिक कहते हैं कि नैतिक मापदण्डों के लिये किसी प्रेरक की जरूरत नहीं पुण्य का पुण्य होना इस बात की जमानत है कि उसे अपनाया जाये और बुराई, बुराई होने की हैसियत से इस योग्य है कि मनुष्य उससे दूर भागे। इसके लिये किसी प्रेरक की जरूरत नहीं?

ताअत[४] में ता रहे न मय[५] व अंगबीं[६] की लाग।
दोज़ख में डाल दो कोई लेकर बहिश्त[७] को॥

परन्तु यह इस बात का सबूत है कि ये लोग मानव-प्रकृति को बिल्कुल नहीं जानते। अगर उनकी बात सही होती तो मनुष्य जानते-बूझते कभी पुण्य से दूर हटता नहीं और न बुराई ही को कभी जान-बूझ कर अपनाता।

मनुष्य के हर काम के लिये कोई न कोई प्रेरणा अवश्य होती है और विरोधी प्रेरणा की मौजूदगी में स्वीकारात्मक प्रेरणा की आवश्यकता और अधिक हो जाती है। यह एक अटल सच्चाई है कि हमारे भी भीतर और हमारे बाहर नैतिकता

(१) हरकत, गति, (२) प्याला, (३) सुराही (४) आज्ञापालन व भक्ति (५) मद्य, शराब (६) शहद।

का बन्धन तोड़ने के लिये अनगिनत प्रेरणा मौजूद हैं और कभी कभी ये प्रेरणायें इतनी प्रबल होती हैं कि बुराई की तमाम बाहरी बाधाओं को तोड़ कर रख देती हैं।

किसी के रोकने से कब तेरा दीवाना रुकता है।
बहार आई! चला मैं! ये धरी हैं बेड़ियाँ मेरी॥

क्या यह वस्तुस्थिति इस बात का तकाजा नहीं करती कि नैतिकता अपनाने की तीव्र और प्रबल प्रेरणा मौजूद हो ताकि मनुष्य नैतिकता का बन्धन तोड़ने के बजाय नैतिकता का पाबन्द हो सके——तो ये प्रेरणायें क्या हैं?

आज नीति-शास्त्रज्ञों ने ईश्वर से उदासीन होकर इस सवाल का जवाब देने की कोशिश की है। किसी ने कहा, नैतिक नियमों के अपनाने की प्रेरणा खुशी पाने की उम्मीद है। किसी ने कहा, यह प्रेरणा पूर्णता प्राप्त करने की भावना है। किसी ने कहा, समाज के भय और समाज में अच्छा नाम कमाने की इच्छा से मनुष्य बुराइयों से बच सकता है और अच्छाइयों को अपना सकता है, किसी ने राज्य के भय और उसकी प्रसन्नता को प्रेरणा का स्थान दिया। पर जैसा कि स्वयं आप महसूस कर रहे होंगे, इनमें से एक बात भी सचमुच पुण्य की प्रेरणा नहीं। यह सही है कि प्रसन्नता पुण्य से भी प्राप्त होती है पर संसार के बहुत से लोग प्रसन्नता ही को प्राप्त करने के लिये बुराइयों के करने के अपराधी हुये हैं। पूर्णता एक अस्पष्ट वस्तु है और बहुत से लोग बुराइयों में होड़ लगाने ही को पूर्णता (कमाल) समझते हैं और अगर समाज में नीति-विरोधी मापदण्ड आम हो जायें तो पूर्णता प्राप्त करने की भावना ही हर व्यक्ति को नीति-उल्लंघन पर उकसाया करेगी, समाज और राज्य का भय और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने की भावना उसी समय प्रेरक बन सकती है, जबकि समाज और राज्य की बुनियाद नैतिक नियमों पर हो, वरन् यही भावना नैतिक मापदण्डों के उल्लंघन का कारण बनेगा और यह भी तो हो सकता है और होता है कि मनुष्य समाज और राज्य दोनों को धोखा दे दे और यह सवाल अपनी जगह पर रहा कि स्वयं समाज और राज्य नैतिकता की पाबन्दी क्यों करें?

सच तो यह है कि ऊपर लिखी प्रेरणाओं में से कोई एक प्रेरणा भी मनुष्य को बुराई और नीति उल्लंघन से रोकने की शक्ति नहीं रखती और न उनमें से किसी में इतना बल है कि नीति-पालन पर लोगों को उभार सके——यह वस्तुस्थिति कितनी भयानक है। नीति-उल्लंघन की सभी प्रेरणायें मौजूद हैं और नैतिकता के पालन की कोई प्रेरणा नहीं। इस वस्तुस्थिति के कितने भयानक परिणाम निकल सकते हैं, इसका आप खुद अन्दाजा कर सकते हैं, यह उसी का नतीजा है कि मूल नैतिक मापदण्डों का दलन—जोरदार दलन जितना ज्यादा आज के युग में हुआ और हो रहा है, आसमान की आँखों ने ऐसा दलन कभी नहीं देखा होगा।

यह है ईश्वर से उदासीन होकर इस समस्या को हल करने का परिणाम, पर ईश्वर को मान लीजिये तो यह हल न होने वाली समस्या आप से आप हल हो जाती है। मनुष्य के कर्मों पर नजर डालिये या ये कर्म किसी हानि से बचने के लिये होते हैं या कोई लाभ पाने के लिये या प्रेम और द्वेष की भावनाओं के तहत, आग से हरेक बचता है क्योंकि आग से नुकसान पहुँच जाने का डर होता है, दवा कड़वी होती है पर लाभ की उम्मीद में मनुष्य पी जाता है, बच्चे का लालन-पालन बहुत ही कठिन काम है पर माता-पिता, स्नेह के कारण खुशी खुशी सारी कठिनाइयाँ सहज करते हैं। अगर उन्हें मालूम हो जाये कि अमुक व्यक्ति उनके बच्चे की जान लेने वाला है तो वे उससे बहुत अधिक घृणा करने लगते हैं और बदला लेने के लिये भावुक हो वह सब कुछ कर गुजरते हैं, जो उनके बस में होता है।

ईश्वर को मान लेने की हालत में ये सब प्रेरणायें

पूरी तरह मनुष्य के भीतर जमा हो जाती हैं। ईश्वर विश्व का स्रष्टा और शासक है, इससे यह बात खुद सामने आती है कि उसकी शक्ति अथाह है, वह अगर नाराज हो जाये तो उसकी पकड़ बहुत अधिक कड़ी होगी और अगर वह खुश हो जाये तो उसकी देन भी अपार होगी क्योंकि उसका भण्डार अथाह है। मनुष्य संसार को धोखा दे सकता है पर ईश्वर को नहीं दे सकता, मनुष्य का एक एक कर्म और उसके मन का एक-एक संकल्प व भावना, सब कुछ उसकी दृष्टि में है और वह अन्धेरे उजाले, एकान्त, हर हाल में उसे देख रहा है। मनुष्य उसकी पकड़ से बच कर कहीं जा भी नहीं सकता, क्योंकि विश्व के कण-कण पर उसका प्रभुत्व है।

फिर जब मनुष्य ईश्वर की शक्ति, विधि और उसके सीमा पर पहुँचे हुये गुणों का विचार करता है, विश्व के सौंदर्य में उस सत्ता के सौंदर्य का प्रतिबिम्ब देखता है और स्वयं उस पर विश्व के पालनहार की ओर से पुरस्कार और उपकारों की जो अथाह वर्षा हर क्षण हो रही है, उनका उसे दर्शन और अहसास होता है तो उसका मन असली 'महबूब' और सदा उपकार करते रहने वाली सत्ता के प्रति कृतज्ञता और प्रेम की भावनाओं से ओत प्रोत हो जाता है, उसका रोम-रोम अपने इष्ट प्रभु की वन्दना और स्तुति के गान गाता है और जब उसे मालूम हो जाता है कि उसका इष्ट प्रभु जीवन की नैतिक मापदण्डों के अनुसार देखना चाहता है और भ्रष्टाचार और अख[illegible]की बेक़ैदी से बहुत रुष्ट होता और ऐसे लोगों से घृणा करता है जो भ्रष्टाचारी होते हैं तो वह भय, लालसा और प्रेम के मिले जुले भावों से ओत-प्रोत होकर बेअख्तियार अपने जीवन को नैतिक मापदण्डों का पाबन्द बना लेता है और नैतिक नियमों का उल्लंघन करने से ऐसे घृणा करने लगता है जैसे एक व्यक्ति अपने घोर शत्रु या अपने इष्ट व्यक्ति के घोर शत्रु से घृणा करता है।

अनुवादक:—मुहम्मद अमीन आज़मी

बदतमीज बनाम बदतमीज

लार्ड बर्कन हेड अभी नौजवान बैरिस्टर थे। एक दिन जज विरोधी पक्ष की खुल्लम-खुल्ला हिमायत कर रहा था, तो उन्होंने जवाब दे दिया। जज ने जरा तलखी से डाँट पिलाई और दोनों ओर से गर्मा गर्मी होने लगी।

जज ने तैश में आकर कहा——"छोकरे। तुम सख्त बदतमीज हो!"

लार्ड बर्कन हेड अब अधिक सहन न कर पाये। तुरन्त बोल उठे——"वास्तव में हम दोनों बदतमीज हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि आपकी आदत पुख्ता हो चुकी है और मैं अभी बनने की कोशिश कर रहा हूँ।"

—शाकिर पुरुषार्थी

उपदेश भुना लिया गया

युवराज एडवर्ड ने अपनी माँ रानी विक्टोरिया को पत्र लिखकर उनसे १० पौंड भेजने की प्रार्थना की। जवाब में रुपये के बजाय रानी ने एडवर्ड को एक लम्बा-चौड़ा पत्र लिख भेजा जिसमें कम खर्च करने पर एक अच्छा खासा लेक्चर पिलाया गया था। एक हफ्ते के बाद युवराज ने माँ को सधन्यवाद एक पत्र लिखा:—

"अनुग्रह के लिये आभारी हूं। अब मुझे दस पौंड की जरूरत नहीं, क्योंकि आपका पत्र मैंने पच्चीस पौंड में बेच दिया है।"

आओ जीवन सुखी बनायें

- बिना बुलाये किसी सभा या जलसे में न जाओ।
- सभा में किसी को हटाकर या खसका कर न बैठो।
- अगर तुम्हें सभा का रंग पसन्द न हो, तो बुरा-भला न कहो, बल्कि वहां से धीरे से चले जाओ।
- अगर तुम्हें या तुम्हारे साथियों को उठना है तो एक साथ न उठो, बड़ी असभ्यता है, बल्कि थोड़ी-थोड़ी देर में बारी-बारी से उठो।
- सभा में बैठकर उकस-पुकस न करो, बुरी बात है।
- अगर तुम्हें बहुत और बार-बार खाँसी आती है तो सभा में बैठो ही नहीं।
- बिठाने वाले जहाँ बिठायें वहीं बैठो, मनमानी न बैठो, हाँ मनचाहा बैठने की गुन्जाइश हो, तो जहाँ उचित समझो वहीं बैठ सकते हो।
- सभा में बैठकर गप्पें न हांको, न पैर पसार कर बैठो।
- सभा में ऐसे कभी न बैठो कि पड़ोसी को कष्ट हो या उसे बुरा लगे।
- सिगरेट और बीड़ी का प्रयोग, जहाँ तक हो सके न करो, और अगर करो भी तो सभा संयोजक की इजाजत ले लो तब करो।
- सभा में दूसरों को धकेल कर उनके आगे बैठने की कोशिश न करो, छोटे बच्चों को सदा आगे बिठाओ।
- सभा में खाँसते या छींकते समय रूमाल मुंह पर रख लो।
- सभा में बैठते ही उठने के चक्कर में न पड़ जाओ। अगर ऐसे ही जल्द जाना हो तो एक किनारे ही बैठा करो।
- सभा में चिल्लाओ नहीं कि दूसरों को सुनने में बाधा हो।
- सभा में जब बीड़ी या सिगरेट पीना चाहो या पान खाना चाहो तो पहले पास के बैठने वालों को दो, भले ही वे उसे इस्तेमाल न करें। ऐसा करने से तुम उनके दिलों में अपनी जगह बना सकोगे।
- सभा में अपनी हैसियत के मुताबिक पोशाक पहन कर जाओ।
- सभा में बेमौका हंसने से बचते रहो।
- सभा में अगर तुम्हें कुछ कहना हो तो इशारे से काम लो।
- धार्मिक सभाओं का मान-सम्मान करो, भले ही सभा तुम्हारे अपने धर्म की हो या किसी और के धर्म की।
- सभा से ऐसे उठो कि पास में बैठने वालों को भी खबर न हो।
- सभा में से अगर कोई व्यक्ति उठ जाये और अपनी जगह पर कोई सामान छोड़ जाये कि फिर आकर बैठेगा तो तुम वहां बिल्कुल न बैठो।
- सभा में कैसे भी रंग में भंग न डालो।
- सभा में गन्दे कपड़े पहनकर और बदबूदार चीजें खा-पीकर न जाओ।
- सभा में अगर किसी को जगह न मिल रही हो और तुम जगह बना सकते हो तो उसे जगह जरूर दो, यह तुम्हारा कर्तव्य है।
- अगर दो व्यक्ति एक दूसरे से अलग न होने के लिये एक साथ बैठे हों तो उनके बीच में घुसकर कभी न बैठो।

श्री आनन्द

डायरी का पन्नाः— —मौ० मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

"शुक्र का घर"

मोटर फर्राटे भरती हुई बरेली की सड़क पर दौड़ रही थी——दावत अखबार मेरे हाथ में था। एक शीर्षक पर नज़र पड़ी——"ट्रक-ड्राइवर ने पाँच आदमी कुचल दिये" पूरी खबर पढ़ कर थोड़ी देर के लिये मैं सिहर उठा और बात आई गई हो गई, मानो मन में ऐसा सोच कर सन्तोष कर लिया कि कोई बात नहीं, लोग मरते ही हैं, होंगे कोई, हम नहीं थे——कितना स्वार्थपूर्ण था यह निर्णय।

मैं फिर अखबार पढ़ने लगा। इत्मीनान से अखबार पढ़ता रहा। पढ़ते ही पढ़ते यकायकी कान में कुछ ऐसी आवाज़ आई जैसे कोई ट्रक आ रहा हो। ट्रक न जाने कितनी बार देखा था, सड़क पर चलता हुआ भी, रुका हुआ भी और तेज़ दौड़ता हुआ भी, पर आज का ट्रक ट्रक नहीं, भयानक देव मालूम हो रहा था। ऐसा मालूम हुआ जैसे मौत दोनों आँखें निकाले गुर्राती हुई बढ़ी चली आ रही हो——ट्रक क़रीब होता रहा और मेरा भ्रम बढ़ता रहा, यहाँ तक कि जब वह बिल्कुल ही क़रीब आ गया तो मैं बे-अख़्तियार संभल कर बैठ गया, कलमा पढ़ा और अल्लाह-अल्लाह करने लगा। ट्रक डरावनी आवाज़ के साथ सन्न् से गुज़र गया। और मैं ने यह महसूस किया मानो मौत टल गई हो। बरेली तक न जाने कितने ही ट्रक आते और जाते रहे और हर बार मेरी यही दशा होती रही। ट्रक तो सदा ही रास्ते में मिलते हैं, पर आज हर ट्रक मौत का साया मालूम होता था। आख़िर वह ट्रक ही तो था जिस ने अपने शैतानी चर्खे के नीचे आदम के पाँच बेटों को कुचल डाला था।

मोटर चलती रही और फ़ासला घटता रहा। सड़क के दोनों किनारों पर बबूल के पेड़ देख कर यकायकी .खुशी से झूम उठा कि बरेली क़रीब आ गई और फिर मोटर बरेली शहर में थी। मोटर से उतरा और शहर की घमाघमी, शोर व हंगामा और कामों की अधिकता में सब कुछ भूल गया। दफ़्तर में पहुँचा और अपने कामों में लग गया।

दफ़्तर की चौखट पर खड़े-खड़े अतीक़ साहब से बातें हो रही थीं कि यकायकी उन्हों ने इस तरह पूछा मानो मुझे ख़बर हो गई हो, "आप को हसनैन की दुर्घटना तो मालूम होगी ना!"

"नहीं तो!" मैं ने कहा और प्रश्नवाचक चिह्न बन कर उन का मुँह देखने लगा।

"परसों रात! एज़्ंट नगर वाली सड़क पर डाक्टर साहब का लड़का हसनैन ट्रक से कुचल कर मर गया।" अतीक़ साहब ने दुख भरी आवाज़ में कहा।

मेरा दिल धक् से रह गया और इतने ज़ोर से धड़कने लगा कि मेरे कान उस की आवाज़ सुनने लगे। मेरा मस्तिष्क तुरन्त ही अखबार की खबर की ओर मुड़ गया ट्रक से पाँच आदमी कुचल कर मर गये" और फिर मेरे मस्तिष्क में बिना किसी क्रम के ही शब्द घुमड़-घुमड़ कर आने लगे——ट्रक, चूर-चूर हड्डियाँ, .खून में सने कपड़े, कपकपा देने वाली चीखें, मौत, शोक आदि आदि।

हसनैन कुचल कर मर गया! कैसा डील-डौल वाला गठे शरीर का जवान था वह; उस की उम्र ही क्या थी, यही १७, १८ साल, अभी कुछ महीने पहले ही तो वह एज़्ंट नगर जेल में नौकर हुआ था! किस हमदर्दी व फुरती से लोगों की दवाइयाँ

तैयार करता और माँ-बाप ने कितनी तमन्नाओं के साथ उस का ब्याह रचाया ! ब्याह हुये अभी दिन ही कितने हुये थे— छः सात माह पहले ही तो माँ ने हज़ार अरमानों के साथ उस का घर आबाद किया था !!!——हसनैन कुचल गया ! क्या उस की नई नवेली दुलहन पति से महरूम हो गई । मेरी आँखों में अँधेरा छा गया । मैं सोचता रहा और बार-बार ऐसा महसूस होता रहा मानो मन अत्यधिक दुखी हो उठा हो ।

डाक्टर साहब के पास शोक-प्रदर्शन के लिये जाना चाहिये——मैं ने सोचा और फिर हम लोग दुख व आश्चर्य की मिली-जुली भावनाओं के साथ डाक्टर साहब के घर पहुँचे— रस्मी शोक-प्रदर्शन के लिये नहीं बल्कि सचमुच डाक्टर साहब का ग़म ग़लत करने के लिये । सलाम व दुआ के बाद बातें होने लगीं और मैं डाक्टर साहब को बराबर देखता रहा, ऐसे देखता रहा जैसे पहली बार देखा हो या वर्षों के बाद देखा हो और उन से सम्बन्धित कुछ अनोखी व विचित्र घटनायें हों ।

आज डाक्टर साहब के होंठों पर मुस्कान न थी, थी भी तो बहुत हलकी सी, आवाज़ दुख से भारी थी और आदत के ख़िलाफ़ गर्दन और कमर कुछ झुकी हुई, मानो बेटे की मौत ने उन की कमर तोड़ दी हो । मैं डाक्टर साहब को बराबर देखता रहा——डाक्टर साहब के भीतर का मनुष्य आज मुझे महान दीख पड़ा, ऐसा मनुष्य जिसे अल्लाह पर पूरा भरोसा हो, जो उसी की प्रसन्नता पर प्रसन्न हो, जिसे अल्लाह से कोई शिकायत न हो, जो अपनी हर चीज़ को अल्लाह की अमानत समझता हो । मेरे मन में भीतर ही भीतर उन का सम्मान बढ़ता गया । वह सब्र की मूर्ति बने सिर झुकाये बैठे थे——

"कल दोपहर को हम ने उसे दफ़ना दिया" डाक्टर साहब ने कहा और फिर हमारे पूछने पर दुख भरी व भारी आवाज़ में कहना शुरू किया—

"यूसुफ़ साहब ! वह बड़ा ही हमदर्द और दूसरों के काम आने वाला लड़का था । जिस के साथ भी हमदर्दी करता, बस हद कर देता । परसों शाम वह अपने एक मित्र के बीमार बाप को देखने के लिये गया । बीमार की हालत कुछ अधिक ख़राब थी , उस ने साइकिल उठाई और कहा मैं अभी दवाख़ाने से दवाई बना कर लाता हूँ । बीमार ने कहा अब रात हो रही है, तुम अकेले कहाँ जाओगे (अपने बेटे की ओर इशारा करते हुये) अपने दोस्त को भी साथ लेते जाओ ।

हसनैन अपने दोस्त को साइकिल पर बिठाये पुण्य की सम्पत्ति बटोरे ख़ुश-ख़ुश आ रहा था कि पीछे से किसी ट्रक की गड़गड़ाहट की आवाज़ आई । आवाज़ बराबर तेज़ और क़रीब होती गई—ट्रक की लाइट बुझी हुई थी और वह पूरी रफ़्तार से सड़क पर दौड़ रहा था—हसनैन ने बचने की पूरी कोशिश की और बचते-बचते वह सड़क से हटकर कच्ची ज़मीन पर आ गया । तनिक और बढ़ता तो गहरी खाई में जा गिरता । सड़क काफ़ी चौड़ी थी, इतनी चौड़ी कि एक ही वक़्त में तीन ट्रकें गुज़र सकें । यह एक मोड़ था जहाँ ट्रक की चाल धीमी करके मोड़ना चाहिये था, पर ड्राइवर नशे में मस्त अपने बचाव की चिन्ता में लाइट आफ़ किये, बिना कुछ सोचे-समझे, ट्रक दौड़ा रहा था, वह ड्राइविंग के तमाम नियम भूल चुका था, उसे मानव-रक्त की चाट लग चुकी थी । मोड़ पर पहुँचते ही ट्रक ने इन दो साइकिल सवार दोस्तों को भी अपने भारी पहियों में रौंद डाला । एक तो उसी क्षण मौत की गोद में चला गया, जीवन की तमाम योजनायें अधूरी की अधूरी रह गईं और हसनैन चूर हड्डियों का ढाँचा, ख़ून में सने कपड़ों में लिपटा हुआ, मिट जाने वाली दुनिया पर आख़िरी नज़रें डाल रहा था और वातावरण में एक धीमा स्वर गूँज रहा था :—

"सामान सौ बरस का है कल की ख़बर नहीं"

लोगों ने इस दुनिया से दूर और मौत से क़रीब ढाँचे को जीवित अवस्था में चारपाई पर

उठा लिया पर जब अस्पताल में जा कर रखा तो केवल ढाँचा ही रह गया था।"

कितना रोमाञ्चकारी होगा यह दृश्य और कैसी शिक्षाप्रद थी यह मौत! पर मनुष्य का हाल यह है कि वह यह सब कुछ देखता है, पर वास्तव में नहीं देखता। किसी को क्या ख़बर है कि कौन सा क्षण जीवन का अन्तिम क्षण है; वह मनुष्य भी कितना घटिया है जो इस चिन्ता से खाली है और इस निश्चित यात्रा से ग़ाफ़िल !!

डाक्टर साहब की आवाज़ कुछ और बोझिल हो गई और रुँधी हुई आवाज़ में वे बोले "

"वह मुझ से ...मिले बिना ... चला गया ...... ओह ...... मैं जब उसे देखने के लिये अस्पताल पहुँचा तो वह जा चुका था, ख़ून में सनी एक लाश पड़ी थी, पर वह जिसे हम हसनैन कह कर पुकारते थे, सदा के लिये विदा हो चुका था—— ओह !! शुक्र है !!!

अन्त में उस का शव घर आया और कफ़न-दफ़न का इन्तिज़ाम हुआ। कोख और पसलियाँ चूर-चूर हो चुकी थीं; कनपटी की हड्डी पिचक गई थी— लाश क्या थी, शिक्षा प्राप्त करने के लिये एक खुली किताब थी। जिसे हर वह व्यक्ति पढ़ और समझ सकता था, जिस ने अपनी प्रकृति से द्रोह न किया हो।

माँ का बुरा हाल है। तीन दिन से एक क्षण के लिये भी आँख नहीं झपकी — ये तीनों रातें आँखों में कटीं, न कुछ कहती हैं, न बोलती हैं, हैरान बेसुध हर एक चेहरे को ताकती हैं और बस ताकती ही रहती हैं— जैसे वह अजनबी लोगों में आ कर फँस गई हों और किसी की बात न समझती हों।" डाक्टर साहब की आवाज़ और भी बोझिल हो गई और घुटने लगी— उन्हों ने सिर झुका लिया और एक झुरझुरी ले कर ख़ामोश हो गये जैसे वह दिल की हर धड़कन में यह आवाज़ सुनने के लिये चुप हो गये हों कि—— "हम सब ख़ुदा के हैं और ख़ुदा की ही ओर लौट कर जायेंगे।"

अस्र का समय हो चुका था—हम उठे, मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और सब्र व शुक्र का उपदेश देते हुये लौट आये। मैं रास्ते भर इस रोमाञ्चकारी घटना पर विचार करता रहा। मरनेवाले के बाप का दिल क्या कह रहा होगा, माँ पर क्या गुज़र रही होगी— माँ का शोक, भूख-प्यास और आराम, इन्सानी तक़ाज़ों से अलग-थलग— सचमुच दुर्घटना ऐसी ही ऐसी है, जवान, हट्टा-कट्टा, तन्दुरुस्त बेटा, कुछ ही महीने पहले माँ हज़ार अरमानों के साथ दुलहन ब्याह कर लाई — नई नवेली दुलहन के सिर से ताज उतर गया। दुलहन ने इस ख़बर को कैसे सहन किया। दुलहन के दिल की धड़कनें सुन कर मरने वाले के बूढ़े बाप पर क्या बीत रही होगी, दुलहन ने इस ख़बर को कैसे सहन किया होगा— मैं बराबर सोचता रहा और न जाने क्या-क्या बातें, कैसी-कैसी शंकायें पैदा होती रहीं, पर आख़िर मनुष्य के बस में है भी क्या?

दुर्घटनायें किस के जीवन में नहीं होतीं—हिन्दू हो या मुसलमान, अच्छा हो या बुरा, ग़रीब हो या अमीर, कमज़ोर हो या ताक़तवर, दुर्घटनायें तो हर एक के साथ होती हैं और जान व माल की जो हानि हो जाये, रोने-पीटने, चीख़ने-चिल्लाने से उसे भरा नहीं जा सकता, फिर इस से फ़ायदा? और मेरे मस्तिष्क में डाक्टर साहब चिह्न बन कर उभर आये, कितना सब्र किया उन्हों ने—— और क्या ख़ूब फ़रमाया है अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर स० ने कि ईमान वालों का मामला भी विचित्र है, उस का हर मामला भलाई ही भलाई है- यह नेमत ईमान वालों के सिवा किसी को हासिल नहीं। अगर उसे कोई भलाई पहुँचे और वह शुक्र अदा करे तो उस के लिये भलाई ही भलाई है और अगर वह किसी कष्ट का ग्रास हो और सब्र से काम ले तो उस के लिये भलाई ही भलाई है— ऐसा सोचते-सोचते मेरा मस्तिष्क जन्नत में बनने वाले

(शेष पृष्ठ ४० पर)

इस्लामी राज्य के पहले खलीफ़ा :—

—कौसर यज़दानी नदवी

निजी जीवन

इस्लाम से पहले का जो युग था, उसके बारे में सभी जानते हैं कि न सिर्फ अरबों के विश्वास में त्रुटि पैदा हो गई थी, बल्कि उनके कर्मों और आचरणों में बड़ी त्रुटियाँ आ गई थीं। शराब जुए तो उनकी घुट्टी में पड़े हुये थे ही, लूट-मार और गन्दे आचरणों के नमूने भी कुछ कम न मिलते थे। यह सब कुछ था पर हज़रत अबूबक्र अपने स्वभाव के अनुसार बचपन से ही इन चीजों से दूर रहते। उन्हें शराब व जुए से घृणा थी, वह दुराचार से दूर भागते थे, उनमें रहमदिली, सच्चाई, अमानतदारी आदि कूट-कूट कर भरी थी; यही वजह थी कि इस्लाम से पहले जुर्माने की रकमें सब उन्हीं के यहाँ जमा होतीं। सगे-सम्बन्धियों का ध्यान, मेहमानों की आव-भगत; पीड़ितों की सहायता, दीन-दुखियों की सेवा आदि गुणों में वह सदा ही आगे रहते —फिर मुसलमान होने के बाद, ईमान की दौलत से मालामाल होने के बाद तो उनके ये गुण और भी चमक उठे।

उनके अल्लाह से डर, भय और संयम की दशा यह थी कि :—

मुसलमान होने से पहले ही एक बार उन्हें एक व्यक्ति किसी अनजाने रास्ते से ले चला, हाँ यह बता दिया कि——"इस रास्ते में ऐसे आवारा व बदमाश लोग रहते हैं कि इस ओर से गुजरने में भी लज्जा आती है।" इतना सुनना था कि वहीं खड़े हो गये और यह कह कर लौट आये, "मैं ऐसे गन्दे रास्ते से नहीं जा सकता।"

एक बार आपके एक दास ने खाने की कोई चीज लाकर सामने रखी। जब खा चुके तो उन्होंने बताया :—

"आप जानते हैं यह कैसे प्राप्त हुआ?'

"बताओ"

"मैंने इस्लाम लाने से पहले एक व्यक्ति का शकुन निकाला था" दास ने बताना शुरू किया, "शकुन निकालना तो जानता न था, केवल उसे धोखा दिया था। आज उससे भेंट हो गई तो उसने उसके बदले में यह खाना दिया।"

हज़रत अबूबक्र को जब पूरी स्थिति मालूम हो गई तो मुंह में उंगली डाल कर जो कुछ खाया था, कै कर दिया। कहा करते थे कि जो शरीर हराम खाने से पलता है, उसका ठिकाना जहन्नम होता है।"

अल्लाह से भय, रसूल से प्रेम और संयम में वह यहां तक आगे बढ़ गये थे कि एक ईद के दिन :-

हज़रत आइशा के घर में अन्सार की दो लड़कियां बुआस की लड़ाई के ऐतिहासिक गीत गा रही थीं। रसूलुल्लाह दूसरी ओर मुंह किये हुये आराम कर रहे थे कि हज़रत अबूबक्र आ गये। उनके रसूल-प्रेम व संयम ने इतना भी पसन्द न किया, हज़रत आइशा को डांट कर बोले :—

"रसूलुल्लाह के सामने ये शैतानी बाजे व गाने?"

तुरन्त ही पैग़म्बरे इस्लाम बोल पड़े :—

"अबूबक्र! इन्हें गाने दो, हर जाति के लिये एक ईद होती है और यह हमारी ईद है।"

उनका ईश-भय इतना बढ़ा हुआ था कि पाप के किसी कर्म का करना तो बड़ी बात, कड़ा शब्द का मुंह से निकल जाना भी उन पर बहुत बोझ हो

जाता, यहां तक कि जब तक प्रयाश्चित न कर लेते, चैन न लेते।

एक बार हजरत उमर से किसी बात में मतभेद हो गया। बात करते-करते कोई कड़ा शब्द मुख से निकल गया। परेशान हो उठे, और हज़रत उमर से क्षमा मांगने लगे। हजरत उमर ने क्षमा करने से इन्कार कर दिया। उस समय हज़रत अबूबक्र की विकलता की कोई हद न रही। दौड़े-दौड़े रसूलुल्लाह के पास पहुंचे और अपनी परीशानी उनके सामने रखी। रसूलुल्लाह ने उन्हें सान्त्वना दी और कहा:-

"अबूबक्र! अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा, अबूबक्र! अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा, अबूबक्र! अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा।"

इसी बीच हजरत उमर को अपने इन्कार पर पश्चाताप हुआ और हज़रत अबूबक्र को उनके मकान पर खोजते-खाजते नबी स० की सेवा में आ पहुँचे उन्हें देखकर हज़रत मुहम्मद स० के दमकते चेहरे का रंग बदलने लगा। हजरत अबूबक्र ने भांप लिया तुरन्त ही बोल पड़े: -

"हे अल्लाह के रसूल! अल्लाह की कसम! मैंने ही अन्याय किया था, मेरी ही गलती थी।"

कितना था प्यार इन शब्दों में, और कैसी थी हमदर्दी। अबूबक्र ने ही जब प्रार्थना की तो भला रसूलुल्लाह का गुस्सा क्यों न ठंडा पड़ता, फिर भी आप वास्तविकता प्रकट किये बिना न रहे और फ़र्माया:—

"मैंने अल्लाह की ओर से अपने रसूल होने का एलान किया तो तुम सब ने मुझे झुठला दिया, पर अबूबक्र ने तसदीक करके जान व माल से मेरा गम गलत किया। क्या तुम मुझ से मेरे साथी को छुटा दोगे?"

हज़रत रबीआ इब्न जाफर और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० में एक पेड़ के लिये आपस में मतभेद हो गया। हज़रत अबूबक्र ने बात-चीत करते समय कोई ऐसा वाक्य कह दिया जो उन्हें बुरा लगा। लेकिन जैसे ही गुस्सा दूर हुआ, कहने लगे:—

"रबीआ! तुम भी मुझे कोई ऐसी ही कड़ी बात कह दो।"

उन्होंने इन्कार किया तो घबराये व परीशान नबी स० के पास आये। हज़रत रबीआ भी साथ में थे। आपने पूरी बात सुनी और फ़र्माया:—

"रबीआ! तुम कोई कड़ा उत्तर न दो लेकिन यह कह दो -- अबूबक्र! अल्लाह तुम्हें माफ कर दे, हे अबूबक्र!"

हज़रत अबूबक्र पर इस घटना का इतना प्रभाव था कि बुरी तरह रो रहे थे और आँखों से आँसुओं की धारा बराबर बहे चली जा रही थी।

पद-पदवी से उदासीनता

सच्चा ईमान उसी का है और सच्चा मोमिन वही है जिसकी नज़र हर वक्त आखिरत (परलोक) पर हो, जो अल्लाह के लिये जिन्दा हो और उसी के लिये मरना चाहता हो, जिसका विश्वास हो कि मरने के बाद के जीवन की सफलता असल सफलता है, न कि संसार में धन-दौलत और पद-पदवी प्राप्त कर लेने की सफलता! हज़रत अबूबक्र का ईमान ऐसा ही था और वह सच्चे मोमिन कहलाये जाने के हकदार थे! खिलाफत की जिम्मेदारियां तो उन्होंने मुसलमानों में गुटबन्दी पैदा होने और उभरते इस्लामी राज्य की नींव उखड़ जाने से बचाने के उद्देश्य से अपने कन्धों पर उठाली थी वरन् उनका मन कभी भी 'खलीफ़ा जैसे पद को स्वीकार करने पर तैयार न था। यही कारण है कि उन्होंने बार-बार अपने वक्तव्यों में इसका एलान किया था कि कोई अगर

सगे-सम्बन्धियों का ध्यान, मेहमानों की आवभगत, पीड़ितों की सहायता, दीन-दुखियों की सेवा आदि गुणों में वह सदा ही आगे रहते --- फिर मुसलमान होने के बाद, ईमान की दौलत से मालामाल होने के बाद तो उनके ये गुण और भी चमक उठे।

इस बोझ को उठाने के लिये तैयार हो जाये तो वह बड़ी प्रसन्नता से इस पद से हटने के लिये तैयार हैं।

हज़रत राफेअ ताई कहते हैं कि एक बार मैंने कहा——'आप पहुँचे हुये बुज़ुर्ग हैं, मुझे कुछ वसीयत करें, बोले :—

अल्लाह तुम पर दया व कृपा करे, नमाज़ें पढ़ो, रोज़े रखो, जकात दो, हज करो और सबसे बड़ी बात यह है कि कभी नेतृत्व (Leadership) व उच्च पद स्वीकार न करो। संसार में नेता की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है और कियामत (प्रलय) के दिन उस की पकड़ भी कड़ी होगी और चार्ज शीट भी लम्बी होगी।"

एक बार उन्होंने पीने के लिये पानी मांगा, लोगों ने पानी और शहद लाकर पेश किया, लेकिन जैसे ही मुंह के करीब ले गये, बेअख्तियार आँखों में आंसू भर आये और इतना रोये कि तमाम लोग प्रभावित हो उठे। जब कुछ शान्त हुये तो लोगों ने रोने का कारण पूछा। कहने लगेः—

"एक दिन रसूलुल्लाह स० के साथ था। आप किसी चीज को दूर-दूर कह रहे थे। मैंने कहा, हें अल्लाह के रसूल! क्या चीज है जिसे दूर फरमा रहे हैं? मैं तो कुछ नहीं देखता। फ़रमाया, यह छली संसार रूप धारण करके मेरे सामने आया था, मैंने उसे दूर कर दिया।

इस समय मुझे वही घटना याद आ गई और डरा कि कहीं उसके जाल में गिरफ्तार न हो जाऊँ?"

हज़रत अबूबक्र की संसार से उदासीनता अगर देखनी है तो इस में देखिये कि सत्य की राह में अपनी पूरी पूंजी लुटा दी फिर नौबत यहाँ तक पहुँची कि खलीफा बनने के बाद वह बैतुलमाल (राजकोष) के छः हज़ार दिरहम के ऋणी हो गये, लेकिन मुसलमान प्रजा की एक कौड़ी भी अपने ऊपर खर्च करना या औलाद के लिये छोड़ जाना उन्हें पसन्द न था, मरते समय वसीयत कर दी कि मेरा अमुक बाग़ बेच कर बैतुलमाल का ऋण दिया जाये और जो कुछ बच जाये उसे उमर के पास भेज दिया जाये। हज़रत आइशा कहती हैं कि मरने के बाद जब जांच की गई तो केवल इतनी चीज़ें निकलीं— एक दासी और दो ऊंटनियां। अतएव ये तमाम चीज़ें उसी समय हज़रत उमर के पास भेज दी गईं। इस्लामी राज्य के दूसरे खलीफा की आँखें छलक पड़ीं रोकर बोलेः——"अबूबक्र! अल्लाह तुम पर कृपा करे, तुम मरने के बाद भी संसार से उदासीनता की शिक्षा देना न भूले और न ही इसका मौक़ा दिया कि कोई तुम पर उंगली रख सके।"

विनम्रता व सुशीलता

बड़े ही विनम्र व बड़े ही सुशील थे। किसी भी काम के करने में उन्हें झिझक न होती। प्रायः भेड़, बकरियाँ खुद ही चरा लेते और मुहल्ले वालों की बकरियाँ दूह देते थे। यही कारण है कि जब आपको खलीफ़ा बना लिया गया, तो सब से ज़्यादा मुहल्ले की एक लड़की को यह चिन्ता हो गई कि उस की बकरियां अब कौन दूहेगा। हज़रत अबूबक्र ने सुना तो फरमायाः—

"अल्लाह की क़सम! मैं बकरियां दूहूँगा, आशा है मेरा खलीफ़ा बना दिया जाना, मुझे जन-सेवा से रोक न सकेगा।"

हज़रत अबूबक्र कपड़े का व्यापार करते थे, खलीफ़ा चुने जाने के बाद भी पहले की तरह ही कन्धे पर कपड़ों के थान रख कर बाज़ार की ओर चले रास्ते में हज़रत उमर और हज़रत अबूउबैदा से भेंट हुई। उन्होंने कहा, "अब आप मुसलमानों के शासक हैं, चलिये हम आपके लिये कुछ वजीफ़ा नियत कर देंगे।" या एक कथन के अनुसार जब खिलाफ़त की जिम्मेदारियों के कारण आप अपना निजी काम न कर सके, तो साथियों से कहा कि मेरे राष्ट्र के लोग जानते हैं कि मेरा पेशा मेरे घर वालों का बोझ उठाने में कम न था, और अब मैं मुसलमानों के काम में लग गया हूँ, इस कारण मेरे घर वाले इस माल में से खायेंगे और मुसलमानों के लिये व्यापार करेंगे। साथियों ने इसे मंजूर कर लिया।

राजधानी से जब कोई सेना भेजी जाती तो

हज़रत अबूबक्र अपनी कमज़ोरी व बुढ़ापे के बावजूद दूर तक पैदल जाते। अगर कोई अफ़सर सम्मान में घोड़े से उतरना चाहता तो रोक कर कहते—

"इस में क्या बात है अगर मैं थोड़ी दूर तक अल्लाह की राह में अपना पैर धूल में भर लूं ? रसूलुल्लाह का कथन है कि जो पैर अल्लाह की राह में धूल में भरते हैं, अल्लाह उन पर जहन्नम की आग हराम कर देता है।

हज़रत अबूबक्र का हाल तो यह था कि गर्व व अभिमान की निशानियों से भी कांप जाते। एक दिन पैगम्बरे इस्लाम स० ने फरमाया, जो व्यक्ति गर्व से अपना कपड़ा खींचते हुए चलता है, कियामत के दिन अल्लाह इस की ओर नज़र तक न उठायेगा। हज़रत अबूबक्र घबरा गये, कहा मेरा दामन भी कभी कभी लटक जाता है।"

फर्माया, "तुम गर्व से तो ऐसा करते नहीं।"

अल्लाह की राह में खर्च

हम पिछले पन्नों में यह लिख चुके हैं कि हज़रत अबूबक्र ने इस्लाम लाने में जिस निष्ठा व प्रेम का सबूत दिया और इस्लाम लाने के बाद जिस तरह तन-मन-धन की बाजी लगा दी, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। इस्लाम ग्रहण करने से पहले उनके पास ४०,००० दिरहम नक्द मौजूद थे, उन्होंने यह पूरा धन अल्लाह की राह में लगा दिया। देने का हाल तो यह था, साथ ही निष्ठा भी कुछ कम न थी। जब पैगम्बरे इस्लाम कृतज्ञता के रूप में कहते:-

"जान व माल के रूप में मुझ पर अबूबक्र से अधिक किसी का उपकार नहीं"—— तो रो कर कहने लगते:—

"हे अल्लाह के रसूल ! जान व माल सब हुज़ूर के लिये ही है।"

इस्लाम के शुरू के दिनों में कुछ दासों ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया था, जिसके कारण उनके स्वामी उन पर कठोर अत्याचार करते, उन्हें जलती रेत पर लिटाकर मनों भारी पत्थरों से दबा देते उन्हें बांध देते, खाना-पीना बन्द कर देते आदि। हज़रत अबूबक्र से उनके ये अत्याचार देखे न जाते और उन्हें उनकी कीमत उनके स्वामियों को देकर छुड़ा लेते——बिलाल, आमिर, नजीरा, जारिया बनी मोमिल, नहदिया आदि न जाने कितने दास व दासी थे जो स्वामियों के ज़ुल्म का शिकार बने हुये थे और जिनकी गरदनों को हज़रत अबूबक्र ही ने छुड़ाया था।

ऐसे ही हज़रत अबूबक्र दान-पुण्य में भी सदा आगे-आगे रहे। हज़रत उमर ने अनेकों बार चाहा कि वह बाजी ले जायें, पर एक बार भी उनके मुकाबले में सफल न हुये। एक बार पैगम्बरे इस्लाम ने साथियों को सदक़ा (दान-पुण्य) निकालने का हुक्म दिया। हज़रत उमर के पास उस समय हमेशा से अधिक धन था। उन्होंने विचार किया कि आज अबूबक्र से आगे बढ़ जाने का मौक़ा है, इसलिये वह अपना आधा माल लेकर पैग़म्बरे इस्लाम की सेवा में उपस्थित हुये। आपने पूछा कि तुमने घर वालों के लिये कितना रहने दिया है ? बोले, इतना ही। पर हज़रत अबूबक्र अपनी पूरी पूंजी उठा लाये थे। उनसे जब पूछा गया तो उन्होंने कहा, उनके लिये ख़ुदा और उसका रसूल है। इस त्याग व बलिदान पर तो हज़रत उमर की आँखें खुल गईं, बोले——"अब मैं कभी इनसे आगे नहीं बढ़ सकता।"

सच्चा ईमान उसी का है और सच्चा मोमिन वही है जिसकी नजर हर वक्त आखिरत पर हो, जो अल्लाह के लिये जिन्दा हो और उसी के लिये मरना चाहता हो, जिसका विश्वास हो कि मरने के बाद के जीवन की सफलता असल सफलता है, न कि संसार में धन-दौलत, पद-पदवी प्राप्त कर लेने की सफलता।

जन-सेवा

अबूबक्र जैसा नम्र व हितैषी व्यक्ति जब जनसमूह के भीतर रहेगा तो उसे तो उसकी सेवा में

आनन्द ही आयेगा। वह तो दूसरों की सेवा का मौका खोजते रहते——मुहल्ले वालों का काम करते, बीमारों की देख-भाल करते और अपने हाथ से कमज़ोरों व बूढ़ों की सेवा करने में कभी न झिझकते।

मदीना के करीब ही एक बूढ़ी अन्धी औरत रहा करती थी। हज़रत उमर हर दिन सुबह सवेरे ही उसके झोंपड़े में काम कर दिया करते। कुछ दिनों के बाद उन्होंने महसूस किया कि कोई व्यक्ति उनसे भी पहले इस नेक काम को कर जाता है। एक दिन कुछ रात रहे ही पूरी खोज करते हुये आये और देखा कि हजरत अबूबक्र उस बूढ़ी औरत का काम करके झोंपड़े से निकल रहे हैं, चिल्ला पड़े—"कसम है। क्या हर दिन आप ही पहले काम कर जाते हैं ?"

धार्मिक जीवन

हज़रत अबूबक्र रात-रात भर नमाजें पढ़ते, दिन को प्रायः रोज़े रखते, खासतौर से गर्मी का मौसम रोजों ही में बीतता। नमाजों में एकाग्रता की स्थिति यह थी कि लकड़ी की तरह बिना हिले-डुले खड़े रहते, अल्लाह का डर इतना पैदा होता कि रोते-रोते हिचकी बंध जाती थी। अपनी जिम्मेदारी का अहसास और परलोक का भय इतना रहता कि हरा-भरा पेड़ देखते तो कहते काश! मैं पेड़ ही होता कि हिसाब-किताब के झगड़ों से छूट जाता।' किसी बाग से गुजरते और चिड़ियों को चहचहाते देखते तो ठंडी आहें भर कर कहते—"चिड़ियों! तुम्हें मुबारक हो कि दुनिया में चरती-चुगती हो, पेड़ों की छाया में बैठती हो और कियामत में तुम्हारा कोई हिसाब-किताब नहीं। काश! अबूबक्र भी तुम्हारी तरह होता!"

क़ुरआन मजीद जब पढ़ते तो अनचाहे ही आँखों से आंसू जारी हो जाते और इतना फफक-फफक कर रोते कि आस-पास के तमाम लोग जमा हो जाते।

हज़रत अबूबक्र क़ुरआन मजीद जब पढ़ते तो अनचाहे ही आँखों से आँसू जारी हो जाते, और इतना फफक-फफक कर रोते कि आस पास के तमाम लोग जमा हो जाते।

पुण्य बटोरने का लोभ उनमें कितना था, इसका अन्दाज़ा इस घटना से कीजिये कि एक दिन पैग़म्बरे इस्लाम ने साथियों से पूछा:—

"आज तुममें से रोज़ा कौन है ?"

"मैं" हज़रत अबूबक्र ने कहा।

फिर कहा——"आज किसी ने जनाज़े का साथ दिया है ? किसी ने गरीब को खाना खिलाया है ? किसी ने बीमार को देखने जाने का साहस किया है ?"

इन सवालों के जवाब में अगर किसी ने हां कहा तो वह हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ थे।

आपने फर्माया:—

"जिसने एक दिन में इतने पुण्य बटोर लिये हों वह निश्चय ही जन्नत में जायेगा।"

मेहमानों की आवभगत

हज़रत अबूबक्र मेहमानों की बड़ी आव-भगत करते और उनका ध्यान बहुत रखते।

एक बार रात के समय सहाबियों में से कुछ लोग उनके मेहमान थे। उन्होंने अपने सुपुत्र अब्दुर्रहमान को हिदायत कर दी कि मैं रसूलुल्लाह की सेवा में जा रहा हूँ, तुम मेरे वापस आने से पहले इन्हें खिला-पिला देना। हज़रत अब्दुर्रहमान ने हिदायत के मुताबिक उनके सामने खाना सजा दिया, पर उन लोगों ने घर के मालिक की अनुपस्थिति में खाने से इन्कार कर दिया। संयोग कि हज़रत अबूबक्र देर से आये और यह मालूम करके कि मेहमान अब तक भूखे बैठे हैं अपने बेटे पर बहुत ज़्यादा नाराज होने लगे और बुरा-भला कह कर कहा, "अल्लाह की कसम। मैं इस को आज खाने में नहीं शरीक करूंगा। हज़रत अब्दुर्रहमान पहले तो डरे फिर कुछ साहस बटोर कर कहा, "आप अपने मेहमानों से पूछ लीजिये कि मैंने खाने के लिये आग्रह किया था या नहीं ? "मेहमानों ने पूरी बात

(शेष पृष्ठ ४० पर)

कैसे थे वे लोग:- —सै० मुहम्मद यूसुफ इस्लाही

जब वायदा करो, पूरा करो

(१)

मामूनरशीद अब्बासी युग के सातवें खलीफा थे। वह बड़े ही सच्चरित्र, शास्त्र-प्रेमी और अनुभवी शासक थे। उनके समय में एक औरत ने वायदा पूरा करने का एक ऐसा आदर्श पैदा किया कि जिसे सुनकर आज भी हिम्मत बंधती है।

अपने भाई अमीन के क़त्ल होने के बाद जब मामून सत्तारूढ़ हुये तो उनके चचा इब्राहीम इब्न मेंहदी ने उनकी मातहती स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। मामून ने उनके मुक़ाबले के लिये एक बड़ी सेना तैयार की। इब्राहीम को मालूम हुआ तो बहुत डरे और छिप गये। उनके छिपने की सूचना पा कर मामून ने पूरे देश में एलान करा दिया कि जो व्यक्ति इब्राहीम को पकड़ कर लायेगा उसे एक हज़ार अशर्फियां इनाम में दी जायेंगी।

इस भारी इनाम का एलान सुन कर हरेक चाहता कि काश मुझे इब्राहीम कहीं मिल जाते। संयोग कि एक सिपाही ने इब्राहीम को देख लिया और बहुत खुश हुआ कि अब तो हज़ार अशर्फियां मिलेंगी। यह सोच कर इब्राहीम के पीछे भागा और कहने लगा यही वह आदमी है जिस की खलीफ़ा खोज कर रहे हैं। ऐसा सुनकर इब्राहीम भी डरे कि अब तो बचने की कोई शक्ल नहीं। अन्त में सिपाही ने इब्राहीम को पकड़ लिया और दोनों आपस में गुथ गये। रास्ता चलते बहुत से लोग जमा हो गये, पर इब्राहीम कैसे भी जान बचा कर भागे और घबराहट में एक बहुत ही तंग व अंधेरी गली में घुस गये——सामने ही एक घर में एक औरत बड़े रख-रखाव व गम्भीरता के साथ बैठी हुई थी। इब्राहीम को परीशान व घबड़ाया हुआ देख कर उसने पूछा—

> इस्लाम का यह नैतिक सिद्धान्त 'जब वायदा करो, पूरा करो' ऐसा न था कि जिसने अमली शक्ल न अपनाई हो। बड़े से बड़े सहाबी से लेकर एक छोटे से छोटे मुसलमान तक ने——जिसके मन में ईमान रच बस गया था——इस सिद्धान्त की पूरी पाबन्दी की है। आज हममें अगर कोई कोताही या कमी आ गई है तो इस सिद्धान्त का कोई अपराधी नहीं, हमारी अपनी गलती है, हमें निम्न घटनाओं से शिक्षा लेनी चाहिये।

"आप यहाँ कैसे आये? क्या काम है?"

"मैं तुम्हारे पास शरण लेने आया हूं। मुझे अपनी जान का भय है।" इब्राहीम ने कहा।

"आप बिल्कुल चिन्ता न करें, आप मेरे पास हैं। मैं आप को शरण देती हूँ। आप को अब कोई कष्ट नहीं पहूंचा सकता।" इतना कह कर उस औरत ने इब्राहीम को एक कमरे में बन्द कर दिया और बाहर से कुन्डी लगाकर इत्मीनान से बैठ गई।"

अभी इब्राहीम की सांस भी ठिकाने नहीं आई थी कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। इब्राहीम ने दरवाज़े के दराड़ से देखा, तो वही सिपाही था और बहुत से लोग उसके साथ थे।

इब्राहीम से हाथापाई में वह सिपाही अधिक घायल हो गया था और उससे अच्छी तरह चला भी नहीं जा रहा था, सिर में पट्टियां बंधी हुई थीं——वह आते ही, जमीन पर धड़ाम से गिर पड़ा। इब्राहीम चुपके-चुपके यह दृश्य दराड़ में से देख रहे थे और उन्हें विश्वास हो गया था कि मेरी मौत आ गई है। वह मन ही मन सोच रहे थे —— 'मेरी मौत मुझे यहां लाई है —— जैसी अल्लाह की खुशी।"

पर औरत इत्मीनान से यह सब कुछ देखती रही और तनिक भी नहीं घबड़ाई। लोग कुछ देर तो वहां ठहरे फिर चले गये। जब सब लोग चले गये तो औरत सिपाही के पास पहुंची, उसकी मरहमपट्टी की, उसको ढाढ़स बंधाई और देर तक उसको सान्त्वना दिलाती रही। कुछ देर बाद सिपाही को कुछ आराम मिला तो वह वहीं पड़ कर सो रहा। जब सिपाही सो गया तो औरत धीरे से उठी, इब्राहीम के पास आई और कहा:–

"मेरा विचार है कि इस सारे झगड़े की जड़ आप ही हैं?"

"इब्राहीम कहते ही क्या, असल बात बता दी।"

औरत बड़े ठंडे मन से बोली——"कोई बात नहीं, आपको मैं श्रण दे चुकी हूँ। अब यह सम्भव नहीं कि मैं अपना वचन तोड़ दूं, आप बिल्कुल चिन्ता न करें। उचित यही है कि आप यहाँ से चुप-चाप दबे पैरों चल दें।

इब्राहीम ने मौका ग़नीमत जाना और तुरन्त ही वहां से चले गये।

रास्ते भर इब्राहीम मन ही मन सोचते रहे, कैसी विचित्र औरत है, औरत है या कोई स्थिर चट्टान—— यह जानते हुए कि मुझे मामून के यहां पहुंचा कर १००० अशर्फियां ले सकती है, उसने अपने वायदे को पूरा करने के लिये मुझे छोड़ दिया। फिर इसे यह भी मालूम होगया कि उसके पति को मैंने ही घायल किया है और शत्रु उसकी मुट्ठी में था, आश्चर्य है कि इस पर भी वह अपने वचन से न डिगी और चट्टान की तरह उस पर जमी रही।

कुछ ही दिनों बाद इब्राहीम की गलती माफ़ कर दी गई और चचा भतीजे में समझौता हो गया।

एक दिन मामून ने चचा से कहा, "चचा, अपने छिपने के जमाने की कोई घटना सुनाइये।"

इब्राहीम ने उस विचित्र औरत के रख-रखाव, जमाव और वायदे पर डटे रहने की शिक्षापूर्ण घटना मजे ले ले कर सुनाई।

मामून भी यह घटना सुन कर अधिक प्रभावित हुआ। उस औरत को बुलवाया और बहुत सा पुरस्कार दे कर उसे सम्मानित किया।

(२)

हर्मुजान ईरान के रहने वाले थे और वहां के बड़े आदमियों में समझे जाते थे। दूसरे खलीफ़ा हजरत उमर के समय में एक बार किसी संगीन जुर्म में पकड़े गये। क़ाजी ने उनके क़त्ल का हुक्म दे दिया।

कत्ल से पहले जब हजरत उमर के सामने हाजिर किये गये तो उन्होंने प्रार्थना की कि मैं कुछ कहना चाहता हूं! खलीफ़ा ने इजाजत दे दी।

हर्मुजान ने कहा—"अमीरुलमोमिनीन! मैं प्यासा हूँ, मेरे लिये पानी मंगवाया जाये और जब तक मैं उस पानी से प्यास न बुझा लूं, मुझे क़त्ल न किया जाये।"

अमीरुलमोमिनीन ने हर्मुजान के लिये पानी मंगवाया और उन्हें ढाढ़स दिया कि तुम इत्मीनान से पानी पी लो।

नौकर पानी का गिलास अन्दर लाया और उसे हर्मुजान के हाथ में दे दिया।

हर्मुजान पानी का प्याला हाथ में लिये हुये बोले—

"अमीरुलमोमिनीन! देखिये आपने मुझे यह वचन दिया है कि जब तक मैं पानी न पी लूं, मैं श्रण में हूं ——और मैं कत्ल न किया जाऊंगा।"

हजरत उमर ने कहा——हां, तुमसे वायदा किया जा चुका है, तुम इत्मीनान से अपनी प्यास बुझा लो।

ऐसा सुनते ही हर्मुजान ने धड़ाम से गिलास जमीन पर पटक दिया गिलास टूट-फूट गया और पानी बह गया ——तमाम लोग चकित हो यह तमाशा देख रहे थे कि हर्मुजान बोला:—

"अमीरुलमोमिनीन ! आपको अपना वायदा याद है ?"

हजरत उमर समझ गये, चेहरे पर मुस्कान फैल गई और कहा:--

"अच्छा इन्हें आजाद करदो। इनसे वायदा किया जा चुका है और मुसलमान उसी को कहते हैं जो अपना वायदा पूरा करे।"

हुर्मुजान की आँखें खुशी से चमक उठीं। वह देर तक हजरत उमर के चेहरे को तकते रहे। वह इस सद्व्यवहार से बड़े प्रभावित हुये।

वायदे की इस पाबन्दी ने उनके मन का संसार ही उलट दिया, तुरन्त वह मुसलमान हो गये——इस आज़ादी ने उन्हें सदा के लिये अल्लाह का दास बना दिया।

अब वह मुसलमानों की सोसाइटी के एक अहम मेम्बर थे, यह विदेश उनका अपना देश था, ये अजनबी लोग उनके अपने भाई थे, हर चेहरे पर उनके लिये मुस्कानें थीं, और हर दिल में उनके लिये जगह थी——लोक-परलोक की उन्नतियों के तमाम रास्ते उनके लिये खुल गये और अल्लाह की भक्ति व आज्ञापालन में वह यहाँ तक आगे बढ़े कि कुछ ही दिनों में खलीफ़ा के विशेष सलाहकार बन गये।

अब मैं 'उन्हें' अपनी कैसे कहूँ ?

मैंने तब कवितायें लिखनी शुरू कर दी थीं और उन्हें प्रकाशित देखने की एक अभिलाषा मन में थी, जो पूरी नहीं हो रही थी। नाश्ते के पैसों का सदुपयोग मैं डाक-टिकटों की खरीद में करता था और नित्य नई-नई पत्रिकाओं में अपनी कवितायें भेजा करता, पर दुर्भाग्यवश कोई भी रचना छप नहीं पाती थी। रचनाओं की वापसी से मेरा किशोर कवि विह्वल हो उठा और मैंने एक मधुर अपराध करने का साहस किया।

उन दिनों प्रयाग से एक अच्छी मासिक पत्रिका निकला करती थी। उसमें मैं हिन्दी के प्रतिष्ठित कवियों की कवितायें हमेशा पढ़ा करता था। कुछ ऐसे नाम भी थे, जो बार-बार उस पत्रिका में दिखाई पड़ जाते थे। मैंने उन्हीं में से एक के नाम से (जो आज हिन्दी कविताओं की पुरानी पीढ़ी का एक प्रसिद्ध नाम है) अपनी दो कवितायें उक्त पत्रिका में छपने के लिए भेज दीं। डर था, कहीं मेरा यह षड्यन्त्र नाकाम न हो जाये, पर मैं सफलीभूत हुआ और एक दिन मैंने देखा मेरी वे दोनों कवितायें दूसरे के नाम से प्रकाशित हो गई हैं। मैं प्रसन्न था कि मेरी योजना सफल हो गई, पर मन ग्लानि से भी भर गया था कि इस तरह दूसरे के नाम को बदनाम करना ठीक नहीं।

धीरे धीरे दिन बीतते गये और मेरे मन में उन दो कविताओं की भूली स्मृति भी शेष नहीं रह गई। इस बीच किसी ने कोई स्पष्टीकरण भी नहीं किया।

अभी पिछले वर्ष जब मैं अपने शोधकार्य के प्रसंग में कुछ कविता-पुस्तकों से गुजर रहा था, तो उक्त प्रसिद्ध कवि की पुस्तक में अपनी उन दो कविताओं को छपा देख कर मन आन्दोलित हो उठा। तब मेरी स्थिति उस पिता की तरह हो गई थी जो गरीबी की स्थिति में अपनी दो दुधमुंही बालिकाओं को मेले में छोड़ आया हो और आज उन्हें युवती रूप में देख रहा हो। मैंने पन्ने को उलट-पलट कर देखा, कवि महोदय ने कहीं भी कोई ऐसा संकेत नहीं किया था कि यह रचना उनकी नहीं है।

— कृष्ण नन्दन 'पीयूष'

उस जगदीश्वर के गुण गाओ !

—'हैरत' बस्तवी—

उस जगदीश्वर के गुण गाओ ।
जिससे पुलकित भू का कण कण,
मुखरित है जीवन का क्षण क्षण,
शोभित है आकाश मनोहर,
ज्योतिर्मय रवि, शशि, तारक गण ।
उस जगदीश्वर के गुण गाओ !!

उस जगदीश्वर के गुण गाओ !
जिसके ऋतुओं की मधुशाला,
जग को करती है मतवाला,
जिसकी पुष्पित फुलवारी में,
सौरभ की है शीतल ज्वाला !
उस जगदीश्वर के गुण गाओ !!

उस जगदीश्वर के गुण गाओ !
जिस के वर्षा का करुण जल,
धोता खेतों का अन्तस्तल,
बजती जिसके मलय पवन में,
जीवन-प्रिये की मृदु-पायल !
उस जगदीश्वर के गुण गाओ !!

उस जगदीश्वर के गुण गाओ !
जिसके हैं सब बाग बगीचे,
सुन्दर सुन्दर फूल-गलीचे,
जिसका शासन पूरब, पश्चिम,
उत्तर, दक्षिण, ऊपर, नीचे ।
उस जगदीश्वर के गुण गाओ !!

उस जगदीश्वर के गुण गाओ !
जिस की शोभा बड़ी सुघर है,
जो अविनाशी, अजर, अमर है,
गायक जिसकी महिमाओं का,
युग युग के कण्ठों का स्वर है !
उस जगदीश्वर के गुण गाओ !

"अंगूर का बेटा न हुआ"

हाल में ही वाशिंगटन में विभिन्न देशों के मनोविज्ञान शास्त्रियों की एक कांफ्रेंस हुई। उस कांफ्रेंस में स्टेनली ए. रूडिन नामक एक डाक्टर ने विभिन्न देशों के निवासियों के स्वभाव के सम्बन्ध में एक बड़ी खोजपूर्ण बात कही है। उनका कहना है कि निराश और मायूस होने पर हरेक देश के निवासी की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न होती है। उदाहरणार्थ, यदि किसी अंग्रेज को निराशा का सामना करना पड़े तो उसका ऊपरी होंठ अकड़ जायेगा और संभव है कि कुछ दिन के बाद उसके होंठ पर फोड़ा हो जाये। यदि प्रेम-व्यापार में या किसी अन्य व्यापार में कोई फ्रांसीसी असफल हो जाये तो उसे शराब पीते-पीते मरना सूझता है और वह समझता है कि इसी प्रकार वह निराशा से बच सकता है। यदि डेन्मार्क के किसी निवासी को निराशाजनक विफलता का सामना करना पड़े तो वह यह पसन्द करता है कि अब अपने आपको गोली मार कर अपनी इहलीला समाप्त कर दे।

किन्तु अमरीकियों का स्वभाव इन सबसे विचित्र है। यदि किसी अमरीकी को सब ओर निराशा हाथ लगे और कहीं से कोई आशा की किरण दिखाई न दे तो वह अपने को मायूस करने वाले को गोली मार देगा और इस काम में अपनी सहायता करने वाले के आश्रितों को प्रभूत धनराशि देकर खुद 'अतसर' से मरेगा।

जिस डाक्टर ने उपरोक्त बात कही उसने पश्चिमी देशों के निवासियों के स्वभाव का ही अध्ययन किया एशियाई देशों के स्वभाव का अध्ययन नहीं किया। यदि उसने भारतीयों के स्वभाव का अध्ययन किया होता तो शायद उसे अलग-अलग राज्यों के निवासियों के स्वभाव का अलग-अलग विश्लेषण करना पड़ता।

किसी राज्य के निवासी शायद गाली गुफ्तार से ही अपने मन की भड़ाँस निकाल लेते, किसी राज्य के निवासी बिना हाथापाई के संतोष न करते और कहीं-कहीं शायद ऐसा होता कि दफ्तर में अपने अफसर से डाँट खाने पर किसी भी साथी से सहानुभूति न पाकर बाबूनुमा लोग अपने मन का रुद्ध आवेग, आक्रोश, क्रोध और निराशा घर आकर अपनी पत्नी तथा बच्चों पर उतारते।

परन्तु इस समय एक बात ऐसी है जो प्रायः सभी राज्यों में समान रूप से पाई जाती है। हो सकता है कि वह पाश्चात्य संस्कृति का ही असर हो। क्योंकि वह बात फैशन में भी शामिल हो गई है—खासकर पढ़े-लिखे लोगों ने जितना उसे प्रश्रय दिया है, शायद उतना अनपढ़ लोगों ने नहीं दिया।

और वह है शराब पीने की लत। आजकल गम गलत करने का सबसे नायाब तरीका यही समझा जाता है। फिर चन्द लोग तो बिना किसी गम के भी गम गलत करने की दवा का रोज सेवन करने से बाज नहीं आते। जो अपने आपको कवि, साहित्यकार या कलाकार समझते हैं वे तो जैसे शराब पीने को अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। और तो और, मद्यनिषेध के लिये जो लोग कभी शराब की दुकानों पर जाकर धरना दिया करते थे अब वे भी पूर्ण मद्यनिषेध की नीति को लागू करने के पक्ष में नहीं रहे और उसके विरोध में तरह-तरह की दलीलें देते भी संकोच नहीं करते।

शराब के लगातार बढ़ते प्रचार का ही यह परिणाम है कि आजकल शराब का वैध या अवैध व्यापार ही सबसे अधिक नफे का व्यापार है। जिस बोतल पर ७५ न० पै० से अधिक खर्च नहीं बैठता, वही बोतल १२ रु० में बिकती है। इस १६०० प्रतिशत मुनाफे के व्यापार में सरकार और ठेकेदार दोनों

(शेष पृष्ठ ४० पर)

.कुरआन मजीद:--

-:सूर: अनआम

(आयत १३२ से १४७ तक)

हर व्यक्ति का स्थान उसके कर्मों के अनुसार है और तुम्हार पालन हार लोगों के कर्मों से अचेत नहीं है। तुम्हारा पालनहार उदासीन है और कृपा करना उसकी रीति है। (१०१) अगर वह चाहे तो तुम

(१०१) "तुम्हारा पालन हार उदासीन है" अर्थात उसका कोई स्वार्थ तुम से अटका हुआ नहीं है, उसका कोई हित तुमसे सम्बन्धित नहीं है कि तुम्हारी अवज्ञा से उसका कुछ बिगड़ जाता हो या तुम्हारे आज्ञा पालन से उसे कोई लाभ पहुँच जाता हो। तुम सब मिलकर घोर अवज्ञा-कारी बन जाओ तो उसके शासन में तनिक भर भी कमी नहीं कर सकते और सबके सब मिलकर उसके भक्त व आज्ञापालक बन जाओ तो भी उस के राज्य में कुछ बढ़ा नहीं सकते। वह न तुम्हारी सलामियों का मुहताज है, न तुम्हारे भेंट व चढ़ावे का। अपने अनगिनत खजाने तुम पर लुटा रहा है बिना इसके कि इनके बदले में अपने लिये तुम से कुछ चाहे।

"कृपा करना उसकी रीति है।" यहां सन्दर्भ में इस वाक्य के दो अर्थ हैं-एक यह है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हें सीधी राह चलने पर जो उभारता है और उसके विरुद्ध चलने से जो मना करता है, उसका कारण यह नहीं है कि तुम्हारे सीधे रास्ते पर चलने से उसका कोई फायदा और गलत रास्ते पर चलने से उसका कोई नुकसान होता है, बल्कि इसका कारण वास्तव में यह है कि सीधा रास्ता चलने में तुम्हारा अपना फायदा और गलत रास्ता चलने में तुम्हारा अपना नुकसान है। इसलिये यह तो उसकी बड़ी कृपा है कि वह तुम्हें वह सही तरीका बताता है जिससे तुम उच्च स्थान तक आगे बढ़ते रहने के योग्य बन सकते हो और उस गलत तरीके से रोकता है जिससे नीचे की ओर गिरते जाते हो।

दूसरे यह कि तुम्हारा पालनहार सख्ती करने वाला नहीं है, तुमको सजा देने में उसे कोई मज़ा नहीं आता है, वह तुम्हें पकड़ने और मारने पर तुला हुआ नहीं है कि इधर तुम से गलती हो और वह तुम्हारी खबर ले डाले। सच तो यह है कि वह अपनी तमाम रचनाओं पर बड़ी कृपा करने वाला है, चरम सीमा पर पहुँची हुई कृपाओं के साथ वह खुदाई कर रहा है। और यही उसका मामला मनुष्यों के साथ है। इसीलिये वह तुम्हारी गलतियों पर की गई गलतियों को क्षमा करता जाता है। तुम उसका कहा नहीं मानते पाप करते हो, अपराध करते हो, उसकी दी हुई रोजी पर पल कर भी उसके आदेशों से मुंह मोड़ लेते हो, पर वह सहिष्णुता व क्षमा से ही काम लिये जाता है और तुम्हें संभलने, समझने और अपना सुधार करने की छूट पर छूट दिये जाता है, बस अगर वह सख्ती करने वाला होता, तो उसके लिये कुछ कठिन न था कि तुम्हें संसार से हटा देता और तुम्हारी जगह किसी दूसरी जाति को उठा खड़ा करता, या तमाम मनुष्यों को खत्म करके किसी और रचना को जन्म देता।

लोगों को ले जाये और तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को ले आये, जिस तरह कि उसने तुम्हें कुछ और लोगों की नस्ल से उठाया है। तुमसे जिस वस्तु का वायदा किया जा रहा है वह निश्चय ही आने वाली है (१०२) और तुम अल्लाह को मजबूर करने की ताकत नहीं रखते। हे मुहम्मद! कह दो कि लोगों! तुम अपनी जगह अमल (कर्म) करते रहो और मैं भी अपनी जगह अमल (कर्म) कर रहा हूँ (१०३) जल्द ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि फल किसके पक्ष में अच्छा होता है, जो भी हो, यह सही है कि अत्याचारी कभी कल्याण नहीं पा सकते।

इन लोगों (१०४) ने अल्लाह के लिये स्वयं उसी की पैदा की हुई खेतियों और जानवरों में से एक भाग निश्चित किया है और कहते हैं यह अल्लाह के लिए है, मनमाने तौर पर और यह हमारे ठहराये हुए भागीदारों शरीकों) के लिये (१०५) फिर जो हिस्सा उनके गढ़े (ठहराये) हुए भागीदारों के लिए है

(१०२) अर्थात क़यामत (प्रलय) जिसके बाद तमाम अगले पिछले मनुष्य जीवित किए जायेंगे और अपने पालनहार के सामने आखिरी फैसले के लिए पेश होंगे।

(१०३) अर्थात मेरे समझाने से तुम नहीं समझते और अपने गलत तरीक़ों से नहीं रुकते तो जिस राह पर तुम चल रहे हो चले जाओ, और मुझे अपनी राह चलने के लिए छोड़ दो कर्म-फल जो कुछ होगा वह तुम्हारे सामने भी आ जायेगा और मेरे सामने भी।

(१०४) ऊपर के भाषण का क्रम इस बात पर खत्म हुआ था कि अगर ये लोग नसीहत मानने के लिए तैयार नहीं हैं और अपने अज्ञान पर हठ ही किए जाते हैं, तो उनसे कह दो कि, अच्छा तुम अपने तरीक़े पर अमल (आचरण) करते रहो और मैं अपने तरीक़े पर अमल (आचरण) करूंगा, क़यामत (प्रलय) एक दिन ज़रूर हो जायेगी, उस वक्त तुम्हें मालूम हो जायेगा कि इस तरीक़े का क्या परिणाम होता है, यह भली प्रकार समझ लो कि वहां अत्याचारियों का कल्याण न होगा। इसके बाद अब उस अज्ञानता की कुछ व्याख्या की जाती है जिस पर वे लोग हठ कर रहे थे और जिसे छोड़ने के लिए कैसे भी तैयार न होते थे, उन्हें बताया जा रहा है कि तुम्हारा वह "अत्याचार" क्या है जिस पर जमे रहते हुए तुम किसी कल्याण की आशा नहीं कर सकते।

(१०५) इस बात को वे स्वय मानते थे कि पृथ्वी अल्लाह की है और खेतियां वही उगाता है और उन जानवरों का पैदा करने वाला अल्लाह ही है जिन से वह अपने जीवन में सेवायें लेते हैं। परन्तु उनका विश्वास यह था कि उन पर अल्लाह की यह अनुकम्पा उन देवियों और देवताओं, और फरिश्तों और जिन्नों और आकाश के नक्षत्रों और पितरात्माओं के माध्यम से है जो उन पर दया दृष्टि रखते हैं। इसलिये वे अपने खेतों की पैदावारों और अपने जानवरों में से दो हिस्से निकालते थे। एक हिस्सा अल्लाह के नाम का, इस कृतज्ञता के रूप में कि उसने ये खेत और ये जानवर उन्हें दिये। और दूसरा हिस्सा अपने वंश या कुटुम्ब के संरक्षक उपास्यों को दक्षिणा, प्रसाद और भेंट का ताकि उनकी हमदर्दियां उनके साथ रहें। अल्लाह सब से पहले उनके इसी अन्याय की पकड़ करता है कि ये सब जानवर हमारे पैदा किये हुए और हमारे दिये हुए हैं, इन में यह दूसरों का भेंट और चढ़ावा कैसा? यह नमकहरामी नहीं तो क्या है कि तुम अपने उपकारी के उपकार को, जो उसने सबका सब स्वयं अपनी कृपा और दया से तुम पर किया है, दूसरों के हस्तक्षेप और उनके माध्यम का परिणाम समझते हो और आभारी बनकर उन्हें उसके साथ साझी बनाते हो। फिर दूसरी पकड़ इस बात पर भी की है कि यह अल्लाह का हिस्सा जो उन्होंने निश्चित किया है, यह भी

वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता परन्तु जो अल्लाह के लिए है वह उसके साझीदारों को पहुँच जाता है। (१०६) कैसे बुरे फैसले करते हैं ये लोग !

और इसी तरह बहुत से सहवादियों (मुश्रिकों) के लिए उनके शरीकों (साझीदारों) ने अपनी

मनगढ़न्त ही है, अपने विधायक खुद ही बन बैठे हैं, आप ही जो हिस्सा चाहते हैं अल्लाह के लिए निश्चित कर लेते हैं, और जो चाहते हैं, दूसरों के लिए निश्चित कर देते हैं। जबकि आपने दान का मूल स्वामी और अधिकारी स्वयं अल्लाह है और यह बात उसी के विधान के अनुसार तय होनी चाहिए कि इस दान में से कितना हिस्सा उसके कृतज्ञता के रूप में निकाला जाये और बाकी में कौन कौन हक़दार हैं। फिर वास्तव में इस मन-मानी तौर पर जो जो हिस्सा ये लोग अल्लाह के लिए निकालते हैं और फकीरों और ग़रीबों आदि पर दान करते हैं वह भी कोई पुण्य नहीं है। अल्लाह के यहां उसके स्वीकार किये जाने का भी कोई कारण नहीं।

(१०६) यह सूक्ष्म व्यंग्य है उनकी इस हरकत पर कि वे अल्लाह के नाम से जो हिस्सा निकालते थे उसमें भी तरह तरह की चालें चल कर के कमी करते रहते थे और हर तरीके से अपने गढ़े हुए साझीदारों का हिस्सा बढ़ाने की कोशिश करते थे, जिससे जाहिर होता था कि जो श्रद्धा उनको अपने उन शरीकों (साझीदारों) से है वह अल्लाह से नहीं है। जैसे जो अन्न या फल आदि अल्लाह के नाम पर निकाला जाता उनमें से अगर कुछ गिर जाता तो वह शरीकों (साझीदारों) के हिस्से में शामिल कर दिया जाता, और अगर शरीकों के हिस्से में से गिरता, या अल्लाह के हिस्से में मिल जाता तो उसे उन्हीं के हिस्से में वापस किया जाता। खेत का जो हिस्सा साझीदारों की भेंट के लिए मुख्य कर दिया जाता अगर उसमें से पानी उस हिस्से की ओर फूट बहता जो अल्लाह के लिए मुख्य होता था तो उसकी सारी पैदावार साझीदारों के हिस्से में मिला दी जाती थी, परन्तु अगर उस के विपरीत स्थिति होती तो अल्लाह के हिस्से में कुछ भी बढ़ाया न जाता। अगर कभी अकाल के कारण भेंट चढ़ाने का अन्न अपने काम में लाने की जरूरत पड़ती तो अल्लाह का हिस्सा खा लिया करते थे परन्तु साझीदारों के हिस्से को हाथ लगाते हुए डरते थे कि कहीं कोई विपदा न आ जाये। अगर किसी कारण से साझीदारों के हिस्से में कुछ कमी हो जाती तो वह अल्लाह के हिस्से से पूरी की जाती थी पर अल्लाह के हिस्से में कमी हो जाती तो शरीकों के हिस्से में से कुछ भी उसमें न डाला जाता। इस नीति पर अगर कोई आलोचना करता तो उत्तर में तरह तरह की मन बहलाने वाली टिप्पणियां की जाती थीं। जैसे कहते थे कि अल्लाह तो निरपेक्ष है, उसके हिस्से में से कुछ कम भी हो जाये तो उसे क्या परवाह हो सकती है। रहे ये साझीदार, तो ये भक्त हैं, अल्लाह की तरह निरपेक्ष नहीं हैं, इसलिये थोड़ी सी कमी बेशी पर भी उनके यहां पकड़ हो जाती है।

ऐसे अन्धविश्वास का मूल कारण क्या था, इसको समझने के लिए यह जान लेना भी आवश्यक है कि अरब के मूर्ख अपने माल में से जो हिस्सा अल्लाह के लिये निकालते थे वह भिखारियों, यात्रियों और अनाथों आदि की सहायता में खर्च किया जाता था, और जो हिस्सा साझीदारों की भेंट के लिए निकालते थे वह या तो सीधे धार्मिक वर्गों के पेट में जाता था या थानों पर चढ़ावे के रूप में प्रस्तुत किया जाता और इस तरह मुजाविरों (पुजारियों) तक पहुँच जाता था। इसलिए इन स्वार्थी धार्मिक नेताओं ने शताब्दियों के निरन्तर उपदेश से इन अज्ञानियों के मन में यह बात बैठाई थी कि अल्लाह के हिस्से में कुछ कमी हो जाये तो कुछ परवाह नहीं, पर "अल्लाह

के प्यारों" के हिस्से में कमी नहीं होनी चाहिए, बल्कि जहां तक हो सके कुछ वृद्धि होती रहे, तो अच्छा ही है।

(१०७) यहां "शरीकों" (साझीदारों) का शब्द एक दूसरे अर्थ में इस्तेमाल हुआ है जो ऊपर के अर्थ से भिन्न है। ऊपर की आयत में जिन्हें "शरीक" (साझी) के शब्द से याद किया गया था वे उनके वे उपास्य थे जिनकी कृपा या सिफारिश या माध्यम को ये लोग नेमत प्राप्त कर लेने में सहायक समझते थे और नेमत के आधार के अधिकार में उन्हें अल्लाह के साथ हिस्सेदार बनाते थे। इसके विपरीत इस आयत में "शिर्क" (सहवादिता) से तात्पर्य वे मनुष्य और शैतान हैं जिन्होंने सन्तान वध को उन लोगों की नजर में एक जायज और सही काम बता दिया था। उन्हें शरीक (साझी) करने का कारण यह है कि इस्लाम के दृष्टिकोण से जिस प्रकार पूजा के योग्य केवल अल्लाह है, उसी प्रकार भक्तों के लिए कानून बनाने और हराम व हलाल की सीमायें निश्चित करने का हक़दार भी केवल अल्लाह है। इसलिए जिस प्रकार किसी दूसरे के आगे उपासना के कामों में से कोई काम करने का अर्थ उसे अल्लाह के साथ शरीक (साझी) बनाना है। उसी तरह किसी के स्वयं गढ़े हुए कानून को हक़ समझते हुए उसकी पाबन्दी करने और उसकी निश्चित की हुई सीमाओं को आज्ञापालन के लिए आवश्यक मानने का अर्थ भी उसे खुदाई में खुदा का शरीक (साझी) बना देना है। ये दोनों काम शिर्क (सहवाद) हैं, चाहे इस को करने वाले मुंह से उन सत्ताओं को अल्लाह (ईश्वर) रब (प्रभु) कहें या न कहें, जिनके आगे वे भेंट और चढ़ावा पेश करते हैं या जिनके निश्चित किए कानून को वे आज्ञापालन के लिए आवश्यक मानते हैं।

सन्तान वध के तीन तरीके अरब में चालू थे और कुरआन में तीनों की ओर संकेत किया गया है:--

(१) लड़कियों का वध इस विचार से कि कोई उनका दामाद न बने या पारिवारिक लड़ाइयों में वे शत्रुओं के हाथ न पड़ें या किसी दूसरे कारण से वे उनके लिए बोझ का कारण न बनें।

(२) बच्चों का वध इस विचार से कि उसके पालन-पोषण का बोझ न उठाया जा सकेगा और आर्थिक साधनों की कमी के कारण वे असह्य बोझ बन जायेंगे।

(३) बच्चों को अपने उपास्यों की प्रसन्नता के लिये भेंट चढ़ाना।

(१०८) यहां तबाही का शब्द बहुत अधिक अर्थ रखता है। इससे नैतिक विनाश भी तात्पर्य है कि जो मनुष्य हृदय-कठोरता और क्रूरता की इस सीमा को पहुँच जाये कि अपनी सन्तान का अपने हाथ से वध करने लगे, उसमें मनुष्यत्व का गुण तो दूर की बात है पशुत्व के गुण तक शेष नहीं रहते। और जातीय व राष्ट्रीय विनाश भी, क्योंकि सन्तान-वध का अनिवार्य फल जातियों का घटना और आबादी का कम होना है जिससे मानव-जाति को भी हानि पहुँचती है और वह राष्ट्र भी तबाही के गढ़े में गिरता है जो अपने हामियों और अपनी संस्कृति के कार्यकर्त्ताओं और अपनी संस्पति तथा अधिकारों के उत्तराधिकारियों को पैदा नहीं होने देता या पैदा होते ही स्वयं अपने हाथों उन का वध कर डालता है। और इससे तात्पर्य अन्तिम व परिणाम की तबाही भी है क्योंकि जो मनुष्य निरपराध बच्चों पर यह अत्याचार करता है और जो अपनी मानवता को बल्कि अपने स्वभाव व प्रकृति तक को इस प्रकार उल्टी छुरी से क़त्ल करता है, और जो मानव-जाति के साथ और स्वयं अपने राष्ट्र के साथ यह शत्रु-भाव

धर्म को सन्दिग्ध बना दें (१०९) अगर अल्लाह चाहता तो ये ऐसा न करते, इसलिये उन्हें छोड़ दो कि अपने झूठे आरोप में लगे रहें (११०)

कहते हैं ये जानवर और ये खेत सुरक्षित हैं, इन्हें केवल वही लोग खा सकते हैं जिन्हें हम खिलाना चाहें, जब कि यह इन की स्वयं रचित पाबन्दी है (१११) फिर कुछ जानवर हैं जिन पर सवारी करने और माल ढोने सरीखे दोनों काम हराम कर दिये गये हैं और कुछ जानवर हैं जिन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते (११२)

दिखाता है वह अपने आपको ईश्वर के कठोर दण्ड का भागी बनाती है।

(१०९) अज्ञानता-युग के अरब अपने आप को हज़रत इस्माईल अलै० का अनुयायी कहते और समझते थे और इसके कारण उनका विचार यह था कि जिस धर्म का वह पालन कर रहे हैं वही अल्लाह के नजदीक पसन्दीदा है परन्तु जो दीन (धर्म) उन्होंने हज़रत इब्राहीम व स्माईल अ० से सीखा था उसके अन्दर बाद की शताब्दियों में धार्मिक नेता, कुटुम्ब के सरदार, खानदानों के बड़े बूढ़े और अनेक लोग तरह तरह के विश्वास और आचरण तथा प्रथाओं को बढ़ाते चले गये जिन्हें आने वाली जातियों ने मूल धर्म का अंश समझा और श्रद्धा के साथ उनका पालन किया। चूंकि परम्परा में या इतिहास में, या किसी पुस्तक में कोई ऐसा रिकार्ड सुरक्षित न था जिससे मालूम होता कि मूल धर्म क्या था और बाद में क्या चीजें किस युग में किसने किस प्रकार बढ़ाईं, इस कारण से अरब वालों का पूरा धर्म सन्दिग्ध हो गया था। न किसी चीज़ के बारे में यकीन के साथ यही कह सकते थे कि यह मूल धर्म का अंश है जो अल्लाह की ओर से आया था, न यही जानते थे कि यह बिदअतें (बाद में धर्म में मिलाई जाने वाली चीजें, जो वास्तव में धर्म नहीं) और गलत प्रथाएं हैं जो बाद में लोगों ने बढ़ा दीं। इसी वस्तुस्थिति का प्रतिपादन इस वाक्यांश में किया गया है।

(११०) अर्थात अगर अल्लाह चाहता कि वे ऐसा न करें तो वे कभी न कर सकते थे, परन्तु चूंकि अल्लाह की इच्छा यही थी कि जो व्यक्ति जिस मार्ग पर जाना चाहता है उसे जाने का अवसर दिया जाये, इसी लिए यह सब कुछ हुआ। तो अगर ये लोग तुम्हारे समझाने से नहीं मानते और उन अन्ध विश्वासों पर ही उन्हें हठ है तो जो कुछ ये करना चाहते हैं करने दो, इनके पीछे पड़ने की कोई जरूरत नहीं।

(१११) अरब के लोगों का नियम था कि कुछ जानवरों के बारे में या कुछ खेतियों की पैदावार के बारे में मनौती मान लेते थे कि यह अमुक 'थान' या अमुक देवी के चढ़ावे के लिए मुख्य हैं। उस चढ़ावे को हर एक न खा सकता था बल्कि उसके लिए उनके यहां एक विस्तृत नियम था जिसके अनुसार विभिन्न चढ़ावों को विभिन्न प्रकार के लोग ही खा सकते थे। अल्लाह उनके इस कर्म को न केवल सहचारियों के कर्मों में गणना करता है, बल्कि उन्हें इस पहलू पर भी सचेत करता है कि यह कानून उनका अपना बनाया हुआ है। अर्थात जिस अल्लाह की दी हुई रोजी में से वे ऐसी मनौतियां मानते हैं और चढ़ावे चढ़ाते हैं, उसने न इन मनौतियों और चढ़ावे की आज्ञा दी है और न उनके खाने के बारे में ऐसी पाबन्दियां लगाई हैं। यह सब कुछ उन हठी और द्रोहियों ने मनमानी ही गढ़ लिया है।

(११२) परम्पराओं से मालूम होता है कि अरबों के यहां कुछ विशेष मनौतियों और चढ़ावों के जानवर ऐसे होते थे जिन पर अल्लाह का नाम लेना सही न समझा जाता था। इन पर सवार होकर हज करना मना था, क्योंकि हज के लिए लब्बैक अल्ला हुम्मा लब्बैक (हाजिर हूं, हे अल्लाह!

और यह सब कुछ उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है। जल्द ही अल्लाह उन्हें (११३) झूठ गढ़ने का बदला देगा।

और कहते हैं कि जो कुछ इन जानवरों के पेट में है वह हमारे मरदों के लिए मुख्य है और हमारी औरतों पर हमाम, लेकिन अगर वह मुरदा हो तो दोनों उसके खाने में शमिल हो सकते हैं। (११४) ये बातें जो उन्होंने गढ़ ली हैं उनका बदला अल्लाह उन्हें देकर रहेगा। निश्चय ही वह विधाता है और सब बातों की उसे खबर है।

अवश्य ही वे लोग घाटे में पड़ गये जिन्होंने अपनी सन्तान का अज्ञान और मूर्खता के कारण वध किया और ईश्वर की दी हुई रोजी को अल्लाह पर झूठ गढ़ कर के हराम बना लिया। अवश्य ही वे भटक गये और कभी वे सुमार्ग पाने वालों में से न थे (११५)

वह अल्लाह ही है जिसने तरह तरह के बाग, ताकिस्तान (११६) और नखलिस्तान (मरुद्यान) पैदा किये, खेतियां उगाईं, जिनसे भांति भांति के खाद्य पदार्थ होते हैं, जैतून और अनार के वृक्ष पैदा किये जिनके फल आकार में समान परन्तु स्वाद में भिन्न होते हैं। खाओ इनकी पैदावार को जबकि ये फलें, और अल्लाह का हक़ अदा करो काटो जब उन की फसल, और सीमा से आगे न बढ़ो क्योंकि अल्लाह सीमा से अधिक बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता; फिर वही है जिसने पशुओं में से उन जानवरों को पैदा किया जिनसे सवारी करने और माल ढोने का काम लिया जाता है और वे भी जो खाने और बिछाने के काम

हाजिर हूं) कहना पड़ता था, ऐसे ही उनका दूध दूहते समय या उन पर सवार होने की हालत में या उन का बध करते समय, या उनको खाने के वक्त ध्यान दिया जाता कि अल्लाह का नाम न आए।

(११३) अर्थात ये नियम अल्लाह के निश्चित किए हुए नहीं हैं, पर वे उनकी पाबन्दी यही समझते हुए कर रहे हैं कि उन्हें अल्लाह ने बनाया है और ऐसा समझने के लिए उनके पास अल्लाह का कोई आदेश या प्रमाण नहीं है बल्कि केवल यही सबूत है कि बाप दादा से इसी प्रकार होता चला आ रहा है।

(११४) अरबों के यहां चढ़ावों और मनौतियों के जानवरों के बारे में मनगढ़त कानून बने हुए थे। इसकी एक धारा यह भी थी कि उन जानवरों के पेट से जो बच्चा पैदा हो, उसका मांस केवल मर्द खा सकते हैं, औरतों के लिए उनका खाना सही नहीं। परन्तु अगर वह बच्चा मुर्दा ही हो या मर जाए तो उसका मांस खाने में मर्द औरत सब शरीक हो सकते हैं।

(११५) अर्थात हालांकि वे लोग जिन्होंने ये रस्म और रिवाज गढ़े थे, तुम्हारे बाप दादा थे, तुम्हारे धार्मिक महापुरुष थे, तुम्हारे नेता और सरदार थे, परन्तु सच्चाई हर हाल में सच्चाई है, उनके गढ़े हुए गलत तरीके केवल इसलिए सही और पुण्य नहीं हो सकते कि वे तुम्हारे पूर्वज और महापुरुष थे। जिन अत्याचारियों ने वध जैसे पाशविक कर्म को रस्म बनाया हो, जिन्होंने अल्लाह की दी हुई रोजी को अकारण अल्लाह के बच्चों पर हराम कर दिया हो, जिन्होंने धर्म में नई नई बातें अपनी ओर से ठूंस कर अल्लाह से सम्बन्धित कर दिया हो, वे किस प्रकार सुफल और सुमार्गी हो सकते हैं, भले ही तुम्हारे पूर्वज और महापुरुष हों, जो भी हो, थे वे पथ भ्रष्ट और वे अपनी इस पथभ्रष्टता का कुपरिणाम भी देखकर रहेंगे।

(११६) ऊपर जो शब्द प्रयोग किये गये हैं उनसे तात्पर्य दो प्रकार के बाग हैं, एक वे जिनकी बेलें टट्टियों पर चढ़ाई जाती हैं, दूसरे वे जिनके वृक्ष स्वयं अपने तनों पर खड़े रहते हैं। हमारी भाषा में बाग का शब्द केवल दूसरी प्रकार के

आते हैं (१४७) खाओ उन चीजों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दे रखा है और शैतान के कहे पर न चलो क्योंकि वह तुम्हारा खुला शत्रु है। (१४८) ये आठ नर और मादायें हैं, दो भेड़ की किस्म से और दो बकरी की किस्म से, हे मुहम्मद! इनसे पूछो कि अल्लाह ने उनके नर हराम किये हैं या उनकी मादायें या वे बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों? ठीक ठीक ज्ञान के साथ मुझे बताओ अगर तुम सच्चे हो। (१४९) और इसी तरह दो ऊंट की किस्म से हैं और दो गाय की किस्म से। पूछो इन के नर अल्लाह ने हराम किये हैं या मादा, या वे बच्चे जो ऊंटनी या गाय के पेट में हों। (१५०) क्या तुम उस समय मौजूद थे जब अल्लाह ने उनके हराम होने का आदेश तुम्हें दिया था! फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अन्यायी कौन होगा जो अल्लाह की ओर लगा कर झूठी बातें कहे ताकि ज्ञान के बिना लोगों को ग़लत राह दिखाये। निश्चय ही अल्लाह ऐसे अन्यायियों को सुमार्ग नहीं दिखाता।

बागों के लिए प्रयोग किया जाता है इस लिए हमने पहले का अनुवाद "बाग़" किया है और दूसरे के लिए "ताकिस्तान" (अंगूरी बाग) का शब्द प्रयोग किया।

(१४७) वास्तव में 'फर्श' शब्द प्रयोग हुआ है। जानवरों को फर्श कहना या तो इस रियायत से है कि वे छोटे क़द के हैं और पृथ्वी से लगे हुए चलते हैं या इस रियायत से कि वे जिबह (बध) के लिए पृथ्वी पर लिटाये जाते हैं, या इस रियायत से कि उनकी खालों और उनके बालों से फर्श बनाये जाते हैं।

(१४८) पूरे क्रम पर नजर डालने से यह साफ मालूम होता है कि यहां अल्लाह तीन बातें हृदयङ्गम कराना चाहता है। एक यह कि ये बाग़ और खेत और जानवर जो तुम्हें मिले हुये हैं, ये सब अल्लाह के दिए हुए हैं किसी दूसरे का इस में कोई हिस्सा नहीं है, इसलिए इस दान के प्रति आभार प्रकट करने में भी किसी का कोई हिस्सा नहीं हो सकता। दूसरे यह कि ये चीजें जब अल्लाह की दी हुई हैं तो उनके इस्तेमाल में अल्लाह के ही कानून की झलक होनी चाहिए, किसी दूसरे को हक नहीं पहुँचता कि उनके इस्तेमाल पर अपनी ओर से पाबन्दियां लगा दे! अल्लाह के अलावा किसी और की गढ़ी हुई रस्मों की पाबन्दी करना और अल्लाह के अलावा किसी और के आगे नेमतों का आभार प्रकट करना और भेंट करना ही सीमा पार करना है और यही शैतान की पैरवी है। तीसरे यह है कि ये सब चीजें अल्लाह ने मनुष्य के खाने पीने और व्यवहार में लाने के लिए ही पैदा की हैं, इसलिए पैदा नहीं कीं कि उन्हें अकारण हराम कर लिया जाये। अपने भ्रमों और अनुमानों के कारण जो पाबन्दियाँ लोगों ने अल्लाह की दी हुई रोजी और उसकी दी हुई चीजों के प्रयोग पर लगा ली हैं वे सब अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध हैं।

(१४९) अर्थात अनुमान व भ्रम तथा पूर्वजों की परम्पराएं न पेश करो बल्कि ज्ञान पेश करो; अगर वह तुम्हारे पास हो।

(१५०) यह प्रश्न इस विस्तार के साथ उनके सामने इसलिये रखा किया गया है कि उन पर स्वयं अपने भ्रमों का अनुचित होना स्वयं स्पष्ट हो जाय। यह बात कि एक ही जानवर का नर हलाल हो और मादा हराम, या मादा हलाल हो नर हराम या जानवर खुद हलाल हो मगर उस का बच्चा हराम, ऐसी खुली हुई बेकार बात है कि सुबुद्धि उसे मानने से इन्कार करती है और कोई बुद्धिमान मनुष्य यह सोच नहीं सकता कि अल्लाह ने ऐसी बेकार बात का हुक्म दिया होगा। फिर जिस प्रकार क़ुरआन ने अरब वालों को उनके इन भ्रमों की सारहीनता समझाने की कोशिश की है, ठीक वैसे ही संसार की उन दूसरी जातियों को भी, उनके भ्रमों की निःसारता पर

हे मुहम्मद! इनसे कहो कि जो वह्य मेरे पास आई है उसमें तो मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं पाता जो किसी खाने वाले पर हराम हो, अलावा इसके कि वह मुरदार हो, या बहाया हुआ खून हो, या सूअर का गोश्त हो कि वह नापाक है, या फ़िस्क़ (अतिक्रमण) हो कि अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर (१२१) ज़बह (वध)

सचेत किया जा सकता है, जिनमें खाने-पीने की चीजों में हराम व हलाल की अनुचित पाबन्दियां और छूत-छात की क़ैदें पाई जाती हैं।

(१२१) यह विषय सूर बक़र रूकऊ २१ और सूरः मायदः रूकूऊ १ में गुज़र चुका है, और आगे सूरः नहल रु० १५ में आने वाला है।

सूरः बक़रः की आयत और इस आयत में स्पष्ट रूप से इतना अन्तर पाया जाता है कि वहां केवल "खून" कहा गया है और यहां खून के साथ मसफ़ूह की क़ैद लगाई गई है, अर्थात ऐसा खून जो किसी जानवर को आहत करके या ज़बह कर के निकाला गया हो। परन्तु वास्तव में यह अंतर नहीं बल्कि आदेश का स्पस्टीकरण है। इसी प्रकार सूरः मायदः की आयत में इन चारों चीज़ों के अलावा कुछ और चीज़ों के हराम होने का भी बयान है, अर्थात जानवर जो गला घोंट कर या चोट खाकर या ऊंचाई से गिरकर या टक्कर खा कर मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ा हो। परन्तु वास्तव में यह भी भिन्न नहीं है बल्कि एक व्याख्या है जिससे मालूम होता है कि जो पशु इस तरह मरे हों वे भी मुरदार की परिभाषा में हैं।

इस्लामी कानून के विशेषज्ञों में से एक गिरोह इस बात को मानता है कि जानवरों में से यही चार हराम हैं और इनके अलावा हरेक का खाना ठीक है। यह मत हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास और हज़रत आइशा का था। परन्तु विभिन्न हदीसों से मालूम होता है कि नबी स० ने कुछ चीजों को खाने से या तो मना कर दिया है या उन पर कराहत (अरूचिता) प्रकट की है जैसे पालतू गदहे, केचुलियों वाले हिंसक पशु और पंजों वाली पक्षियां। इसी लिये अनेक इस्लामी कानून के विशेषज्ञ हराम चीजों को उन चार तक सीमित नहीं मानते बल्कि दूसरी वस्तुओं तक उसे विस्तृत कर देते हैं। परन्तु इसके बाद फिर अनेक चीजों के हलाल और हराम होने में विशेषज्ञों के बीच मतभेद पैदा हो गया है। जैसे पालतू गदहे को इमाम अबू-हनीफ़ा, इमाम मालिक और इमाम शाफ़ई हराम कहते हैं। पर कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि वह हराम नहीं है बल्कि किसी विशेष कारण से नबी० ने उससे मना कर दिया है। हिंसक पशुओं और शिकार करने वाले पक्षियों और मुरदार खाने वाले जानवरों को हनफ़ी बिल्कुल हराम कहते हैं पर इमाम मालिक और औज़ाई के निकट शिकार करने वाले पक्षी हलाल हैं, लैस के निकट बिल्ली हलाल है। इमाम शाफ़ई के निकट केवल वे हिंसक पशु हराम हैं जो आदमी पर हमला करते हैं जैसे शेर, भेड़िया, चीता आदि, इकरमा के निकट कौआ और बिज्जू दोनों हलाल हैं। इसी प्रकार हनफ़ी हर प्रकार के कीड़ों को हराम कहते हैं मगर इब्न अबी लैला इमाम मालिक और औजाई के निकट सांप हलाल है।

इन सभी कथनों और उनके तर्कों पर विचार करने से ऐसा मालूम होता है कि वास्तव में ईश्वरीय कानून में बिल्कुल मनहाई उन चार ही चीजों की है जिनका वर्णन कुरआन में किया गया है। इनके अतिरिक्त जानवरों में विभिन्न श्रेणियों की कराहत (मनाही) है। जिन चीजों की मनाही सही कथनों के अनुसार नबी स० से साबित है वह मनाही हराम की श्रेणी के निकट है और जिन चीज़ों के बारे में विशेषज्ञों में मत-भेद है उनकी मनाही सन्दिग्ध है। रही स्वाभाविक अरुचिता तो जिन कारणों से कुछ लोग कुछ चीजों को खाना पसन्द नहीं करते, या जातीय अरुचि-

किया गया हो। फिर जो व्यक्ति मजबूरी की हालत में (कोई चीज़ उन में से खा ले) बिना इसके कि वह अवज्ञा का विचार रखता हो और बिना इसके कि वह सीमा का अतिक्रमण करे, तो निश्चय ही तुम्हारा रब (पालनहार) क्षमा से काम लेने वाला और कृपा करने वाला है। और जिन लोगों ने यहूदी धर्म ग्रहण किया उन पर हमने सब नाखून वाले जानवरों को हराम कर दिया था, और गाय और बकरी की चरबी भी, इसे छोड़ कर कि जो उनकी पीठ या उनकी आंतों से लगी हुई हो या हड्डी से लगी रह जाये। ऐसा हमने

ता कि जिनके कारण मनुष्यों की कुछ जातियां कुछ चीजों को नापसन्द करती हैं, तो ईश्वरीय विधान किसी को विवश नहीं करता कि वह अनायास ही हर उस चीज़ को जरूर खाये जो हराम नहीं की गई है, और ऐसे ही शरीअत (विधान) किसी को यह हक़ भी नहीं देती कि वह अपनी अरुचता को कानून बनादे और उन लोगों पर आरोप लगाये जो ऐसा भोजन करते हैं, जिन्हें वह नापसन्द करता है।

(१२२) यह विषय (प्रसंग) कुरआन में तीन स्थानों पर आया है सूर: अले इमरान में कहा "खाने की ये सारी चीजें (जो शरीअत में हलाल हैं) बनी इसराईल के लिए भी हलाल थीं, कुछ चीजें अवश्य ऐसी थीं जिन्हें तौरात के आने से पहले इसराईल ने स्वयं अपने ऊपर हराम कर लिया था। इनसे कहो कि लाओ तौरात और प्रस्तुत करो उसका कोई वाक्य अगर तुम (अपनी आपत्ति में) सच्चे हो (रुकूअ १०) फिर सूर: निसा में कहा कि बनी इसराईल के जुर्मों के कारण "हमने बहुत सी वह पाक चीज़ें उनके लिए हराम कर दीं जो पहले उनके लिए हलाल थीं" (रुकूअ २२) और यहाँ कहा है कि उनकी शरारतों के नतीजे में हमने उन पर सभी नाखून वाले जानवर हराम किये और बकरी और गाय की चर्बी भी इनके लिए हराम कर दी। इन तीनों आयतों को इकट्ठा करने से मालूम होता है कि शरीअते मुहम्मदी (वह विधान जो मुहम्मद स० पर उतरा) और यहूदी विधान में जानवरों द्वारा प्राप्त शिकारों के हराम और हलाल में जो अन्तर पाया जाता है वह दो कारणों से है :—

एक यह है कि तौरात के उतरने से शताब्दियों पहले हज़रत याक़ूब (इसराईल) अ० ने कुछ चीजों का सेवन छोड़ दिया था। और उनकी सन्तान भी उन चीजों को छोड़ती रही, यहां तक कि यहूदी विद्वानों ने उनको नियामित रूप से हराम समझ लिया और उनका हराम होना तौरात में लिख लिया। इन चीज़ों में ऊंट और खरगोश और साफान शामिल हैं। आज बाइबिल में तौरात के जो अंश हमें मिलते हैं उन में इन तीनों चीज़ों के हराम होने का बयान है (अहबार ११:४-६ इस्तिसना १४:७) लेकिन पवित्र कुरआन में यहूदियों को जो चुनौती दी गई थी कि लाओ तौरात और दिखाओ ये चीजें कहां हराम लिखी हैं, इससे मालूम हुआ कि तौरात में इन हुक्मों की वृद्धि बाद में की गई है। क्योंकि अगर उस समय तौरात में ये आदेश मौजूद होते तो बनी इसराईल फौरन लाकर पेश कर देते।

दूसरा अन्तर इस कारण है कि अल्लाह की उतारी हुई 'शरीअत से जब यहूदियों ने द्रोह (बग़ावत) किया और आप अपने विधायक बन बैठे तो उन्होंने अनेक पवित्र व शुद्ध चीजों को अपनी आलोचनाओं से स्वयं हराम कर लिया और अल्लाह ने दण्ड के रूप में उन्हें इन भ्रान्तियों में पड़ा रहने दिया। इन चीज़ों में एक तो नाखून वाले जानवर शामिल हैं, शुतुरमुर्ग, क़ाज़, बतख आदि दूसरे गाय और बकरी की चरबी। बाईबिल में इन दोनों प्रकार की चीजों के हराम होने को तौरात के आदेश में दाखिल कर दिया। (अहबार ११;१६-१८ इसतशना १४-१५-१७ अहबार ३:१७, ७:२२-२३) परन्तु सूर: निसा से मालूम

उनकी शरारत की सज़ा उन्हें दी थी (१२२) और यह जो कुछ हम कह रहे हैं बिल्कुल सच कह रहे हैं। अब अगर वे तुम्हें झुठलायें तो उनसे कह दो कि तुम्हारे पालनहार का कृपा-क्षेत्र बहुत विशाल है और अपराधियों से उसके प्रकोप (अज़ाब) को वापस नहीं किया जा सकता। (१२३)

होता है कि ये चीज़ें तौरत में हराम न थीं, हज़रत ईसा अ० के बाद हराम हुई हैं और तिइहास भी साक्षी है कि मौजूदा यहूदी शरीअत का संकलन दूसरी शताब्दी ई० के अन्त में रब्बी यहूदाह के हाथों पूर्ण हुआ है।

रहा यह प्रश्न कि फिर इन चीज़ों के बारे में यहां और सूरः निसा में अल्लाह ने हर्रमना (हमने हराम किया) का शब्द क्यों प्रयोग किया तो उसका उत्तर यह है कि अल्लाह के हराम करने की केवल यही एक शक्ल नहीं है कि वह किसी पैग़म्बर और ग्रन्थ द्वारा किसी वस्तु को हराम करे बल्कि उसका एक तरीक़ा यह भी है कि वह अपने द्रोही दासों पर बनावटी धर्म-दर्शकों और जाली कानून बनाने वालों को उन पर नियन्त्रित कर दे और वे उन पर शुद्ध और हलाल चीजों को हराम कर दें। पहले प्रकार का हराम होना अल्लाह की ओर से कृपा के रूप में होता है और यह दूसरी प्रकार का हराम होना उसकी धिक्कार और दण्ड के रूप में होता है।

(१२३) अर्थात यदि तुम अब भी अपनी अवज्ञा (नाफरमानी) के चलन से रुक जाओ और भक्ति के सही तरीके की ओर पलट आओ तो अपने पालनहार की कृपा को अपने लिए विस्तृत पाओगे। लेकिन अगर अपने इसी मुजरिमाना और द्रोही तरीक़े पर अड़े रहोगे तो खूब जान लो कि उसके प्रकोप से भी बचाने वाला कोई न होगा।

--टीकाकार मौ० अबुल आला मौदूदी

आप कैसे पत्रकार हैं ?

---मैं उन दिनों उज्जैन में एक दैनिक पत्र का सम्पादक था। अखबार के मालिक को किसी कार्यवश ग्वालियर जाना था। जब उन के जाने की सब तैयारी हो चुकी, तो मैं ने पूछा— "आप ग्वालियर क्यों जा रहे हैं?" उन्हों ने कहा कि एक ज़रूरी काम से उन्हें सरदार महाडिक से मिलना है।

सरदार महाडिक उन दिनों ग्वालियर में मन्त्री थे। हम लोग ये बातें कर ही रहे थे कि अचानक मेरी दृष्टि अखबार की एक ख़बर पर पड़ी जिस के अनुसार सरदार महाडिक अगले दिन महू में आने वाले थे। मैं ने फ़ौरन मालिक का ध्यान इस ओर आकर्षित किया और कहा "यदि आप को महाडिक साहब से ही मिलना है तो सैंकड़ों मील सफ़र करने की क्या ज़रूरत है, कल महू चल कर उन से मिल लेंगे।"

बात उन की समझ में आ गई और ग्वालियर की यात्रा स्थगित कर दी गई। अगले दिन हम लोग कार में बैठ कर महू पहुँचे, तो डाक-बँगले में उल्लू बोल रहे थे। बहुत देर के बाद माली दिखाई दिया। पूछने पर मालूम हुआ कि महाडिक साहब न तो आये हैं और न उन के आने की ही कोई ख़बर है।

जब हम लोग निराश लौट रहे थे, तो उन्हों ने मुझ से पूछा—"आप कैसे पत्रकार हैं —अखबार की बात पर ही विश्वास कर लिया ?"

—मुग़नी अब्बासी

"केवल छः महीने"

—डब्ल्यू० एच० इलियट

आज से ठीक चालीस साल पहले इसी महीने मैंने एक भूत का किस्सा सुना था, जिसने मुझे कि[illegible]मग्न बना दिया था।

साँझ के भोजन के बाद काफी देर तक हम लोग खाने की मेज़ पर ही बैठे रहे। अन्त में अंधेरा घिर आया और हमारे मेज़बान ने बत्तियाँ मंगवायीं। हममें से एक सज्जन मेज़बान की खूबियों से अच्छी तरह परिचित थे, उन्होंने प्रार्थना की—"रोशनी धीमी ही रहने दीजिये और भूत-प्रेत का कोई किस्सा सुनाइये।" मेज़बान ने वही किया।

भूत-प्रेत के किस्से की जान ही उसके कहने के ढंग में होती है। लेकिन यहाँ मैं कहानी का सारमात्र बता रहा हूँ, इसके लिये मुझे क्षमा कीजियेगा।

इस कहानी में एक आदमी रात काटने के लिये किसी गिरजे की ऊँची मीनार में जा बैठा। वहाँ उसकी मुलाक़ात एक भूत से हो गई, जो कि देखने में भूत बिल्कुल नहीं लगता था। भूत ने कहा—"दोस्त, तुम जो भी पूछना चाहो, मुझसे पूछ सकते हो, मैं उसका जवाब दूंगा।" बड़ा अजीब सवाल था। आदमी ने पूछा—"तो बताओ, मैं और कितने समय तक जिऊंगा ?" सुनकर भूत उदास हो गया, फिर भी उसने अपना वचन निभाया। वह बोला—"दोस्त, सिर्फ छः महीने बाकी हैं, उसके बाद तुम मर जाओगे।"

आगे का किस्सा इस बारे में है कि ये बाकी छः बेशकीमत महीने किस प्रकार बिताऊँ, यह सोचते-सोचते वह आदमी किस कदर मानसिक क्लेश में से गुजरा। वह सब किस्सा चाहें तो हम छोड़ सकते हैं।

हमारे काम की बात तो इतनी है कि हम भी इसे अपने जीवन-क्रम पर लागू करें। मान लीजिये कि आपके मन में यह बात बैठ जाती है कि आप इस दुनिया में छः महीने से ज्यादा नहीं रहने वाले हैं, आप इन महीनों में क्या करेंगे ?

आपको मानो झटके के साथ अपने जीवन को सही चौखटे में वापस बैठाना होगा। जो चीजें गौण हैं, उनसे किनारा कर लेना होगा, और जो चीजें असली महत्व की हैं—चाहे उन पर वर्षों से आपने नजर तक न डाली हो—जैसे भी हो, फिर से हाथ में लेनी होंगी।

मैं नहीं समझता कि तब पैसे का खास महत्व रह जायेगा। आज भी विशेषज्ञ डाक्टर के यहाँ से लौटने पर पैसा हमें कितना महत्वहीन प्रतीत होने लगता है।

कुछ लोगों से आपको फिर मिलना होगा, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये। कुछ पत्र लिखने पड़ेंगे, चाहे यह काम कितना ही दर्दनाक क्यों न हो। आपकी यह भी कोशिश होगी कि कुछ जगहों पर फिर से जायें, उन्हें आखिरी बार देख आयें। कुछ भूलें जो आपसे हो गई थीं, उनके परिमार्जन का भी आप यत्न करेंगे, भले इसमें आपको झुकना और जलील होना पड़े। और भी बहुत सी बातें आपको निपटानी पड़ेंगी—इनमें कई व्यापार-धंधे से सम्बन्धित होंगी। छः महीने कोई बहुत लम्बे नहीं होते।

अब यह न सोचिये कि कैसा मनहूस लेख पढ़ने बैठ गये। बेशक आप अभी बहुत साल जियेंगे। छः महीने की बात को बिसरा दीजिये। तो भी जीवन के बारे में आधा घन्टा इस दृष्टि से विचार कर लेना बहुत ही लाभ की चीज है।

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

आप का विचार है

(१)

मैं कई साल से कान्ति पाबन्दी से पढ़ रहा हूँ। इधर ऐसा महसूस होता है जैसे उसमें कोई कमी आ गई है जिस से रुचि बढ़ने के बजाय घट रही है। शायद विषयों में एकरूपता ही इसकी वजह हो, तो क्यों न आप नई नई और रुचिकर बातें ही उसमें दिया करें। कुछ और कालम बढ़ायें तो बेहतर हो।

कान्ति को रोचक बनाने के सिलसिले में मेरा विचार है कि—

(१) बहुत ज़्यादा धार्मिक लेखों जैसे 'कुरआन मजीद' आदि का सिलसिला अब बन्द करदें। स्पष्ट रहे कि मुझे उसके महत्व से इन्कार नहीं, पर एक पत्रिका में ४-५ साल से एक ही कालम के चलते रहने से मन ऊब सा जाता है।

(२) चालू विषयों (Current Topics पर ऊंची और अच्छी टिप्पणियां जरूर छापें, ताकि रुचि बाकी रहे और आप किस प्रकार और कौन से दृष्टिकोण से चालू विषयों पर सोचते हैं, यह चीज आपके पाठकों के सामने आती रहे।

(३) कहानी आदि जरूर छापें, हो सके तो एकाध धारावाहिक उपन्यास का सिलसिला भी शुरु करें। और अगर इसमें कोई अड़चन हो तो आत्म-कथायें व जीवनियाँ तो जरूर ही दें, पुरानों ही की नहीं, नये और आज के व्यक्तियों के व्यक्तित्व आदि पर भी प्रकाश डालते रहें।

(४) अपने पाठकों से सम्पर्क जरूर रखें। प्रश्न और उत्तर का सिलसिला फिर शुरु करें।

(५) अपने क्षेत्र के लेखकों के अलावा बाहर के लेखकों से भी लेख आदि की मदद हासिल करें, ताकि भिन्न-भिन्न कलमों से निकले हुए भिन्न-भिन्न विचार पाठकों के सामने आ सकें।

मेरा विचार है कि अगर आप ने मेरे इन सुझावों पर ध्यान दिया तो आप को अवश्य ही सफलता होगी।

—'पथिक' आज़मगढ़

जब आप कान्ति पढ़ते हैं तो आप को कुछ बातें पसन्द आती होंगी, कुछ नापसन्द, साथ ही आप की भी कुछ चीजों के बारे में एक राय बनती होगी। अगर आप अपनी इन बहुमूल्य रायों व विचारों को हम तक लिख भेजा करें, तो हमें आप के रुझानों को समझने में मदद मिलेगी। क्या आप से इस सहयोग की आशा की जाये ?

कान्तिः—

श्री पथिक के जो सुझाव यहां प्रस्तुत हैं, उन पर हम आप को विचार करने का निमन्त्रण देते हैं, अपने अपने सुझाव जल्द भेजें। वैसे हम अगले माह के बाद ही इन सुझावों पर विचार कर सकेंगे। दिसम्बर अङ्क के बाद हमारा विशेषाङ्क 'नारी अङ्क' होगा।

(२)

कान्ति बराबर मिल रहा है। आपकी कोशिशें सराहनीय हैं। भगवान आप लोगों को सफल बनाये।

—बिश्व नाथ

—स्वर्गीय श्री जे० डब्लू० लूगर्दी इंगलैंड

इस्लाम की गोद में

जबसे मैंने इस्लाम स्वीकार करने का एलान किया है, उसवक्त से अब तक बहुत से लोगों ने मुझे पत्र भेजे हैं जिन में मुझ से पूछा गया है कि मैंने इस्लाम क्यों ग्रहण कर लिया। इस तरह इस लेख से जहाँ यह बात स्पष्ट होगी कि मैंने इस्लाम ही क्यों पसन्द किया, वहीं यह लेख उन पत्रों का जवाब भी होगा, जिन्होंने मुझ से सवाल किया है।

सबसे पहले तो मैं यह बता देना चाहता हूं कि इस्लाम के अध्ययन के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूं कि इस्लाम विश्वास नहीं है जिसे बिना किसी दलील या प्रमाण के मान लिया जाये, जब कि यह एक ऐतिहासिक धर्म है जो मानवता के तकाज़ों को हरसमय और हर युग में पूरा करता रहेगा। ऐसे ही पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद स० का ऐतिहासिक महत्त्व है, उनकी शिक्षायें और उनकी जीवन-चर्चा का पूरा और सही रिकार्ड मौजूद है जो हमारी ज़िन्दगियों के लिये सर्च लाइट का काम देता है, जब कि दूसरे धर्मों के प्रवर्तकों की जीवनियाँ तक धूमिल हो गई हैं और उनके बारे में लोगों को सही जानकारियाँ बहुत कम हैं। इस्लाम के बारे में तमाम बातें स्पष्ट हैं और व्यक्ति उनसे पूरा पूरा लाभ उठा सकता है और सही रास्ता मालूम कर सकता है।

मैं मुसलमान होने में बड़ा गर्व महसूस कर रही हूँ। .क़ुरआन मजीद ने इस्लाम-धर्म को जो शिक्षायें दी हैं उनको बहुत ही स्पष्ट, स्वभाव के अनुसार और पूरी तरह करने योग्य पाती हूं। इस्लाम धर्म में विशेष रूप से औरतों को जो दर्जा दिया गया है, वह औरतों के स्वार्थ में समता का इतना पोषक है कि इसका उदाहरण संसार के किसी दूसरे धर्म में नहीं मिलता।

—मिसेज़ ड्रोदी एडी इंगलैंड

संसार के अनेकों धर्म ऐसे हैं जिनके ग्रन्थों में समय समय पर तबदीलियां होती रहीं, जिसके नतीजे में अब इन ग्रन्थों में उनकी सही शिक्षायें गुम होकर रह गईं, पर इस्लाम की आसमानी किताब .क़ुरआन मजीद में एक शब्द और एक मात्रा का भी अन्तर नहीं आया है और इस्लाम की शिक्षायें और आदेश जो अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद स० द्वारा अपने बन्दों तक भेजे हैं, आज भी बिल्कुल वैसे ही सुरक्षित हैं।

जिस तरह .क़ुरआन में हमें आदेश दिये गये हैं और हम उन से शिक्षा प्राप्त करते हैं, वैसे ही रसूलुल्लाह की दिन-चर्या हमारे लिये उन शिक्षाओं व आदेशों की व्याख्या है और यह भी हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि अल्लाह के रसूल की कथनी व करनी, पूरी की पूरी हम तक अपनी असल हालत में पहुँची है।

यह मेरा सौभाग्य था कि मैं ने .क़ुरआन मजीद और हदीसों का अध्ययन किया। इस से मेरे मन व मस्तिष्क को वह शान्ति मिली जिस के लिये मैं बिकल था और जो मुझे किसी और धर्म में प्राप्त न हुई थी।

सच पूछिये तो मैं अपनी आत्मा को सन्तुष्ट करने और अपने मस्तिष्क को समझाने के लिये एक स्पष्ट, आसान और पालन करने योग्य धर्म की खोज में था और इस खोज में मैं उसी समय सफल हुआ जब कि मैंने इस्लाम पा लिया।

मैंने मनुष्य के लिये धर्म की जरूरत के सिलसिले

में खूब विचार करने के बाद जो नतीजा निकाला है वह यह है कि:—

धर्म उन नियमों व सिद्धान्तों पर सम्मिलित होना चाहिये जो मनुष्य को मनुष्य के साथ बर्ताव व व्यवहार करने की सही शिक्षा दे और मनुष्य और पालनहार के बीच लगाव की सही व्याख्या करे, वास्तव में धर्म की जरूरत इन्हीं बुनियादों पर होती है और इस्लाम में इन्हीं तकाजों को अच्छी तरह पूरा किया गया है। इस्लाम ने मनुष्य को स्वयं उसके बारे में और उसकी सत्ता के बारे में शिक्षा दी है।

मैंने कुछ दूसरे धर्मों में भी ईश्वर के प्रति मनुष्य के कर्तव्यों और मनुष्यों के आपसी सम्बन्धों के बारे में पढ़ा, पर मुझे दुख है कि इन समस्याओं पर उन की शिक्षायें ऐसी हैं कि उनसे तुष्टि नहीं होती और मनुष्य को सही रास्ता नहीं मिलता। या फिर कुछ धर्मों में ऐसे दर्जे या ऐसी मंजिलें बना दी गई हैं जो किसी प्रकार भी पालन योग्य नहीं, साथ ही उन से तुष्टि भी नहीं होती।

मैं पूरे भरोसे और गर्व के साथ एलान करता हूं कि मनुष्य के लिये मैंने इस्लाम को पूर्ण धर्म पाया और इसी लिये मैं ने उसे स्वीकार किया।

(पृष्ठ ३३ का शेष)

जीवन इस तरह बिताइये, जैसे आपको छः ही महीने जीना हो। और उस हालत में आप जिन चीजों को महत्व देते, उन पर अभी से ध्यान दीजिये। बाकी सब चीजों से किनारा कर लीजिये उन मित्रों से मिलिये, वे स्थान देख डालिये, वे चिट्ठियाँ लिख दीजिये, वे सब व्यापारिक मामले निपटा डालिये।

सच तो यह है कि हममें से अधिकांश लोग जीवन को जीते नहीं हैं, बस जिन्दा रह लेते हैं! और इसके लिये कसूरवार कौन है?

—नवनीत से साभार

साहित्य के डाक्टर

लगभग १५ वर्ष हुये, व्रज साहित्य-मंडल का अधिवेशन दिल्ली में हुआ था। निराला जी भी उसमें पधारे थे। उन दिनों निराला जी 'साहित्य के डाक्टरों' से बेहद नाराज थे। कारण यह था कि कुछ ही दिनों पहले किसी हिन्दी-विरोधी पी० एच० डी० ने हिन्दी काव्य पर व्यंग्य कस दिया था बड़े बेहूदे किस्म का। इसीलिये निराला जी हिन्दी रूपी मही को डाक्टर विहीन कर देने पर तुले हुये थे। उस गोष्ठी में मथुरा के एक होम्योपैथिक डाक्टर भी मौजूद थे। ज्यों ही गोष्ठी समाप्त हुई, निराला जी ने अंग्रेजी में पूछा—"इज देयर एनी डाक्टर हियर?" (क्या यहाँ कोई डाक्टर है?) मैंने तुरन्त उन डाक्टर साहब की ओर संकेत कर दिया। निराला जी ने उनकी ओर मुखातब होकर उन से अंग्रेजी में हिन्दी काव्य पर शास्त्रार्थ छेड़ दिया। उधर बेचारे वे डाक्टर अपने को इस अप्रत्याशित परिस्थिति में पाकर बड़े परेशान हो रहे थे। भला हो बाबू गुलाब राय जी का जिन्होंने निराला जी को समझाया कि ये तो होम्योपैथिक डाक्टर हैं, साहित्य के डाक्टर नहीं और तब जाकर उनका कहीं पिंड छूटा।

— डा० बरसाने लाल चतुर्वेदी

एक नामी वकील से मद्रास हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस ने जज का पद स्वीकार करने का अनुरोध किया।

वकील ने इस आग्रह को स्वीकार करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुये लिखा—

"माननीय महोदय! रोज दिन भर दूसरों की बकवास सुनते रहने के बजाय, मैं दिन में कुछ घंटे स्वयं बकवास कर लेना ज्यादा पसन्द करता हूं।"

इन वकील का नाम है सी०पी० रामस्वामी अय्यर।

— इ० सौंदरराजन

मासिक कान्ति, रामपुर

कान्ति की ग्राहक संख्या बढ़ाइये

और उसकी रियायती स्कीम सफल बनाइये

★ १२) की हिन्दी किताबें लेने पर एक साल के लिये—

★ ६) की हिन्दी किताबें लेने पर ६ महीने के लिये—अपने नाम या किसी दूसरे के नाम कान्ति मुफ़्त प्राप्त कीजिये।

★ पाँच ग्राहकों का सालाना चन्दा एक साथ भेजने पर—कान्ति एक साल तक मुफ़्त प्राप्त कीजिये या ४) की किताबें मँगाइये।

★ तीन ग्राहकों का सालाना चन्दा एक साथ भेजने पर—कान्ति छः महीने तक मुफ़्त प्राप्त कीजिये या २) की किताबें मँगाइये।

★ आगे से कान्ति के सालाना चन्दे की दर निम्न होगी—

चन्दा १ साल–४) चन्दा २ साल—७) चन्दा ३ साल १०)

★ सन् १९६२ तक के तमाम अंकों को ५०% कमीशन पर मँगवा सकते हैं।

मूल्य सूची

(निम्न सूची में से आप जो किताब पसन्द करेंगे वही भेजी जायेगी)

(१) इस्लाम प्रबोधनी	२-००
(२) इस्लाम की जीवन-व्यवस्था	०-५०
(३) शान्ति मार्ग	०-३०
(४) विश्व-पथ-प्रदर्शक	०-३१
(५) बनाव-बिगाड़	०-२५
(६) इस्लाम और अज्ञान	०-३७
(७) सत्य-धर्म	०-२५
(८) जीवन मृत्यु पश्चात्	०-२०
(९) भारत का नव-निर्माण तथा हम	०-९२
(१०) वर्तमान समस्यायें	०-७५
(११) क़ुरआन का परिचय	०-२५
(१२) नैतिक दृष्टिकोण	०-२५
(१३) क़ुरआन और पैग़म्बर	०-२५
(१४) ईमान की हक़ीक़त	०-३७
(१५) इस्लाम की हक़ीक़त	०-३७
(१६) रोज़ा और नमाज़ की हक़ीक़त	०-६३
(१७) ज़कात की हक़ीक़त	०-६५
(१८) हज की हक़ीक़त	०-६२
(१९) सत्य की खोज	०-५०
(२०) मन्ज़िल की ओर	०-२५
(२१) जमाअत इस्लामी का सन्देश	०-३१
(२२) इस्लाम का परिचय	०-२५
(२३) इस्लाम और बर्थ कन्ट्रोल	० ८०
(२४) इन्सान अपने को पहचान	०-२०
(२५) एक कहानी	१ ००
(२६) विश्व-नायक	१-००

मैनेजर मक्तबा ज़िन्दगी व कान्ति, रामपुर यू० पी०

धन्य हैं ऐसे लोग

आप जिस चलते-फिरते जीवित समाज में रहते हैं, वहाँ आये दिन ऐसी घटनायें अवश्य ही घटती हैं जिनमें दूसरों के लिये शिक्षा हो, या दूसरे उससे प्रेरणा प्राप्त कर सकें। आप उन घटनाओं को हमारे पास उर्दू, अंग्रेजी, अरबी आदि किसी भी भाषा में भेजें, हम उन्हें हिन्दी रूप देकर प्रकाशित करने में अपना अहो भाग्य समझेंगे।

(१)

कुछ वर्षों पहले की घटना है। कच्छ मांडवी में एक व्यापारी रहते थे। 'ईमानदारी हमारा मुद्रा-लेख है' ये शब्द उन्होंने केवल तख्ती पर नहीं खुदवा रक्खे थे वरं उनके हृदय में अङ्कित थे। मांडवी भर में उनकी सचाई की प्रसिद्धि थी। उनके कपड़े की दूकान थी। एक बार उन्होंने जहाजी मार्ग द्वारा जामनगर से रेशमी साड़ियां मंगवायीं। जहाज पहुँच गया, पर रसीद (बिलटी) अभी नहीं पहुँची। साड़ियों के ग्राहक आ जाने के कारण इन्हें साड़ियों की जरूरत हो गयी। इन्होंने अपने मुनीम के हाथ कस्टम अफसर को पत्र लिख दिया। सरकारी अधिकारियों पर भी इनके सत्य आचरण की छाप थी, अतः बिना रसीद के ही माल छोड़ दिया गया। उस समय बाहर से आने वाले माल पर जकात लगती थी। रेशमी कपड़े पर जकात ज्यादा थी, सूती पर कम। इस लिये जकात के पैसे भरते समय मुनीम ने पैसे बचाने की नीयत से रेशमी के बदले सूती साड़ी लिखवा दी और पैसे भरकर वह साड़ियाँ दूकान पर ले आया। मालिक ने जकात के पैसे कम लगे देखकर बात पूछी। मुनीम ने कहा—'मैंने पैसे बचाने के लिये सूती साड़ी लिखवा दी थी।' इस को सुनकर मालिक खुश तो हुये ही नहीं, उलटे नाराज होकर बोले कि 'अब आगे से ऐसी बेईमानी करोगे तो तुमको दूकान से निकाल दिया जायेगा पैसों की अपेक्षा अपनी सचाई तथा इज्जत का मूल्य बहुत अधिक है।' मुनीम ने क्षमा माँगी। मालिक जकात की रसीद लेकर तुरन्त जकात-अफसर के पास गये और सारी बातें समझायीं। सूती कपड़े से रेशमी की जकात चौगुनी थी। उन्होंने पूरी जकात भर दी। अफसर इनकी ऐसी ईमानदारी देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए और मन-ही मन कहने लगे—'काश! भारत के सभी व्यापारी ऐसे ही ईमानदार होते तो?' (अखंड आनंद)

—जैनधर्मी

(२)

गत मई मास में गिरीडिह के मकनपुर मुहल्ले में एक धोबी के मकान में एकाएक उस समय आग लग गयी, जब वह पेट्रोल से गरम कपड़े धो रहा था। अग्नि ने तुरन्त प्रचण्ड रूप धारण कर लिया। गिरीडिह पुलिस के हवलदार श्रीशीशनारायण सिंह अग्नि की ज्वाला में बड़ी दिलेरी के साथ कूद पड़े और घर के अन्दर से एक बालक को आग की लपटों में से बाहर निकाल लाये। पुलिस हवलदार और बालक दोनों जलकर घायल हो गये, लेकिन हवलदार की हिम्मत का उपस्थित जनता पर यह प्रभाव पड़ा कि धोबी की शेष चीजों को जलने से लोगों ने बचा लिया। घायलों को चिकित्सा के अस्पताल भेज दिया गया। —श्रीवल्लभदास बिन्नानी

(मासिक कांति) रामपुर

मोती पटेल संस्कारी तथा भक्तिभाव में रंगा रहता। उसने लोगों को प्रेम से समझाकर गांव में शराब; मांस और चोरी को बन्द करवा दिया था। मोती पटेल का लड़का रायसंग जवान हो गया था। मोती पटेल की केवल यही एक कामना थी कि उस का विवाह खूब धूम-धाम से किया जाये।

परन्तु मनुष्य का सोचा हुआ क्या होता है। लड़की के पिता ने अपनी सुविधा के अनुसार जेठ के पिछले पखवाड़े का पक्का मुहूर्त निकलवा कर पुरोहित जी को भेज दिया। पुरोहित महाराज को आया देखकर मोती ने उनका आदर सत्कार किया भोजन की व्यवस्था करायी। मोती पटेल को बगल के गाँव के धरमशी सेठ पर पूरा विश्वास था और पीढ़ियों से दोनों कुटुम्बों का परस्पर व्यवहार भी चला आता था। इससे मोती पटेल ने विवाह का मुहूर्त स्वीकार कर लिया। अवसर देखकर पुरोहित महाराज ने मोती पटेल से कहा—

'पटेल ! तुम्हारे सम्बन्धी जी की यह स्थिति तो नहीं थी कि इस साल विवाह किया जाये, परन्तु तुम्हारी वृद्धावस्था देखकर उन्होंने सोचा कि इसी साल विवाह हो जाये तो तुम भी लड़के के विवाह का लाभ उठा लो। इसी से तुम्हारे सम्बन्धी ने, जितने भी हो सकें, रुपये मेरे साथ भेज देने के लिये कहलवाया है।

मोती पटेल तो यह बात-सुनते ही ठंडा हो गया, परन्तु कलेजा कड़ा करके उसने कहा— 'बगल के गांव में साहूकार के पास जाता हूँ।' सेठ पर मोती का पक्का विश्वास था, इसी से वह अपने खेत तथा घर की सारी उपज बिना मोल तोल किये सेठ के यहाँ पहुँचा देता और वहाँ से जरूरी माल-सामान ले आया करता।

मोती पटेल धरमशी सेठ के पास गया। सेठ ने मोती पटेल के आने का कारण नहीं पूछा और बातों ही बातों में कहा—

'पटेल ! मैंने तुमसे पहले भी कहा था कि अभी तक तो गत वर्ष के बाकी निकलते पाँच सौ रुपये बिना व्याज तुम्हारे नाम खड़े हैं। उसके बाद तुम जो घी का डिब्बा ले गये थे, उनके भी रुपये बाकी ही हैं।'

पटेल ने सेठ की बात की हाँ में हाँ मिलाते हुये कहा—'सेठ ! तुम्हारे पैसे दूध दुहे देने हैं। परन्तु सेठ, इस बच्चे के विवाह का मङ्गलकाम तो तुम्हीं को सम्भालना है। अभी तो मुझे केवल दो सौ रुपये ही चाहिये।'

रुपये का नाम सुनते ही सेठ चमक उठे। अन्त में हाँ-ना करते करते रुपये देना सेठ ने स्वीकार किया। परन्तु बड़ी चालाकी से सेठ ने कहा—'मैं भी आजकल ज्यादा नकद रुपये घर में नहीं रखता अतः दूसरे से उधार लाकर दूंगा।' यों कह कर सेठ ने बही में खाता डालकर पटेल की सही भी करवा ली और जरूरी सामान के लिये गाड़ी भेजने के लिये कहकर दो सौ रुपये दे दिये। शेष पाँच सौ रुपये बारात के पहले दिन देने का वादा किया। पटेल ने हर्ष भरे मन से घर लौटकर दो सौ रुपये पुरोहित महाराज को गिना दिये। अन्त में रायसंग की बारात चढ़ने का दिन आया। अमुक जगह मिलने का संकेत करके बारात को रवाना कर दिया और मोती पटेल दो एक मुस्तैद आदमियों को साथ लेकर धरमशी सेठ के पास रुपये लाने गया। सेठ ने लाचारी प्रकट करते हुये कहा—

'क्या करूं पटेल ! मैंने तो अपने विनोद को रुपये लाने के लिये भेजा था, पर आजकल फार्म कमजोर हो जाने के कारण विनोद को खाली हाथ लौटना पड़ा।'

यह सुनते ही बेचारे पटेल के तो होश-हवाश हीहवा हो गये।

(शेष अगले अंक में)

(पृष्ठ १ का शेष)

बन्धन ढीले पड़ गये हैं। कोई दूसरे को टोक नहीं सकता और न बिगड़ते हुये युवकों को बिगाड़ से बचाने की कोशिश करता है।

● समाज में बढ़ती हुई निर्लज्जता, सिनेमा रेडियो और लाउडस्पीकर पर होने वाले गंदे, गाने, जासूसी नाविल, बेहयाई फैलाने वाले पोस्टर, तस्वीर, मासिक व साप्ताहिक पत्र पत्रिकायें इत्यादि नवयुवकों में घटिया दिलचस्पियाँ पैदा करती और उन्हें जुर्म व गुनाह की ट्रेनिंग देती हैं।

● शिक्षा का उद्देश्य, पाठ्यक्रम, पाठान्तर क्रियायें, नवयुवकों के मेले और अन्य उत्सव उनको अच्छी राहों पर लगाने, उनमें ईशभक्ति, मानवता से प्रेम, सद्भाव, सदाचार उत्पन्न करने के बजाय उन्हें गिरावट, उद्दण्डता और स्वार्थी बनाने में सहायक हो रहे हैं।

तात्पर्य यह कि नवयुवकों पर घर, स्कूल, समाज, हुकूमत, राजनीतिक दलों, सबका प्रभाव पड़ रहा है और इस बिगाड़ में सब बराबर के शरीक हैं। हमें ठंडे मन से इस बिगाड़ को दूर करने की ओर ध्यान देना चाहिये वरन् देश के यह भावी नागरिक अगर इसी तेज़ी से बिगड़ते चले गये तो इस देश का अल्लाह ही मालिक है। इसे तबाही से बचाना असम्भव होगा।

—अफ़ज़ल हुसैन एम० ए०

(पृष्ठ १२ का शेष)

उस घर की ओर चला गया जिसका नाम "शुक्र का घर" होगा।

हज़रत अबूमूसा अशअरी कहते हैं कि रसूले ख़ुदा ने फ़र्माया:—

"जब अल्लाह के किसी बन्दे का बच्चा मरता है तो वह फरिश्तों को सम्बोधित करके पूछता है, फरिश्तो! क्या तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की जान निकाल ली? क्या तुमने मेरे बन्दे से उसके कलेजे के टुकड़े को अलग कर लि ? फरिश्ते कहते हैं जी हां! हे अल्लाह! तो अल्लाह पूछता है, फिर मेरे बन्दे ने क्या कहा? फ़रिश्ते उत्तर देते हैं, हे अल्लाह! उसने तेरा शुक्र अदा किया और कहा, हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर हमें लौट कर जाना है।" उस समय सर्वशक्तिमान अल्लाह हुक्म देता है, तो मेरे इस बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम रखो "शुक्र का घर"

(पृष्ठ १७ का शेष)

बताई और कहा, "अल्लाह की कसम! जब तक आप अब्दुर्रहमान को खाना न खिलायेंगे, हम लोग भी न खायेंगे।——तब कहीं जाकर गुस्सा ठंडा हुआ और लोगों ने खाना खाया।

(पृष्ठ २२ का शेष)

शामिल हैं। शराब की एक बोतल पर आबकारी कर के नाम से ४.१५ रु० सरकार के पास जाता है और ६.७५ रु० ठेकेदार के पास।

शराब की खपत कितनी है और किस प्रकार लगातार बढ़ती रही है उसका नमूना यह है कि अकेले पंजाब राज्य को ही प्रतिवर्ष आठ लाख गैलन शराब का कोटा दिया जाता है और इस वर्ष इस कोटे में दो लाख गैलन शराब की और वृद्धि हो रही है।

सच पूछिए, तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि देश की गुलामी के समय विचारी शराब भी चहारदिवारी में बन्द थी, और आजादी के बाद से शराब उस चहारदिवारी से निकल कर सर्वथा आजाद हो गई। असली स्वराज्य का आनन्द केवल शराब ने ही उठाया है! चारों तरफ भले ही अभाव का चीत्कार हो, किन्तु इस 'अंगूर की बेटी' के लिये 'अभाव' शब्द का ही अभाव है। रह रहकर यह शेर मुंह पर आता है।

उसकी बेटी ने उठा रखी है दुनियाँ सिर पर।
खैरियत यह गुजरी कि अंगूर के बेटा न हुआ॥

—हिन्दुस्तान, दिल्ली

पालनहार का फैसला

तेरे पालनहार ने फैसला कर दिया है कि
तुम लोग किसी की भक्ति न करो, मगर उस की
माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो
अगर तुम्हारे पास उन में से कोई एक या दोनों बूढ़े होकर रहें
तो उन्हें 'ओह' न कहो, न उन्हें झिड़क कर जवाब दो
बल्कि उन से आदर के साथ बात करो
और नम्रता और दया के साथ उनके सामने झुक कर रहो
और दुआ किया करो कि, "पालनहार
इन पर कृपा-दृष्टि रख जैसा कि इन्होंने दया व प्रेम के साथ मुझे लड़कपन में पाला था
तुम्हारा पालनहार अच्छी तरह जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है
अगर तुम सदाचारी बन कर रहो तो
वह ऐसे तमाम लोगों को क्षमा कर देने वाला है
जो अपनी ग़लतियों पर चेतें और भक्ति की ओर पलट आयें
सगे सम्बन्धी को उसका हक़ दो और ग़रीब और मुसाफ़िर को उसका हक़
अपव्यय न करो, अपव्ययी शैतान के भाई हैं
और शैतान अपने पालनहार का नाशुक्रा (कृतघ्न) है
अगर उन से (अर्थात जरूरतमन्द नातेदारों, ग़रीबों और मुसाफ़िरों से) तुम्हें कतराना है
इस कारण कि
अभी तुम अल्लाह की उस कृपा को जिसके तुम उम्मीदवार हो खोज रहे हो
तो उन्हें नरम जवाब दे दो
न तो अपना हाथ गर्दन से बाँध रखो
और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि निन्दित व विवश बनकर रह जाओ
तेरा पालनहार जिसके लिये चाहता है रोजी फैला देता है
और जिसके लिये चाहता है तंग कर देता है
वह अपने बन्दों की हालत जानता है और उन्हें देख रहा है
अपनी औलाद को ग़रीबी के भय से क़त्ल न करो
हम उन्हें भी रोजी देंगे और तुम्हें भी
सच पूछिये तो उनका क़त्ल एक बड़ी गलती है
जिना के करीब न फटको
वह बहुत ही बुरा काम है और बड़ा ही बुरा रास्ता

बनी इसराईल २२ : ३२

Monthly KANTI Rampur November 1963 Regd. No. A—1311

नारी अङ्क — छटे वर्ष का विशेषाङ्क

ऐसा सुनकर आप को भी बड़ी खुशी होगी कि

नये साल के आगमन पर

कान्ति का पांचवाँ विशेषाङ्क

नारी अङ्क

(औरत नम्बर)

दिसम्बर १९६३ के अन्त तक प्रकाशित किया जा रहा है

तैयारियाँ शुरु हो गई हैं।

आप इसे जरूर पढ़ें

और दूसरों तक पहुंचाने में हमारी मदद करें

सालाना चन्दा भेजने पर विशेषाङ्क मुफ्त

कीमत सिर्फ १)

सालाना चन्दा ४)

—मैनेजर